चकमक

फरवरी, 2000 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00

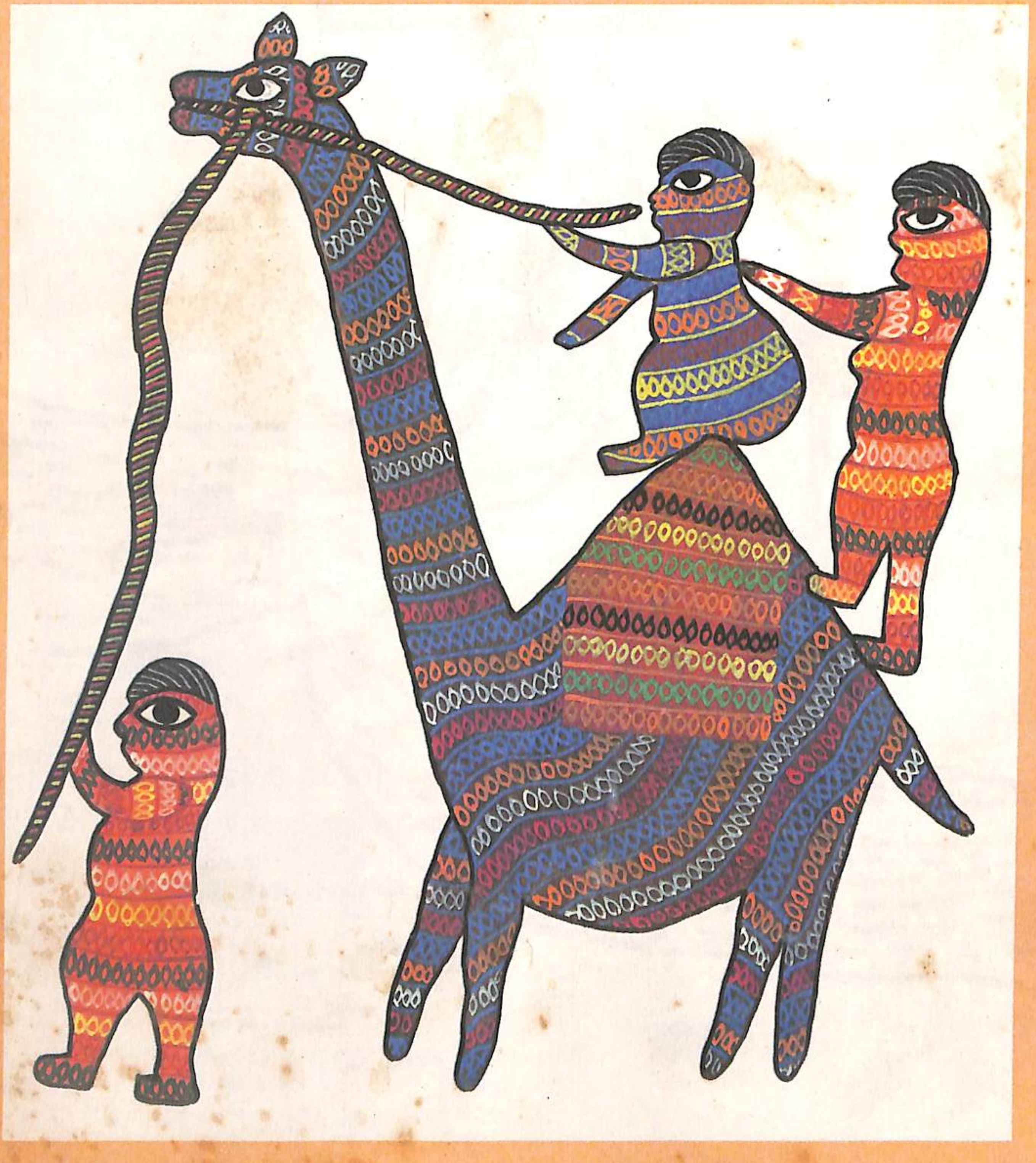

विजय चौहान, पाँचवीं, कंजार्डा, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

फरवरी, 2000 के 173 वें अंक में

क्यों होते हैं फरवरी में कभी 28 दिन तो कभी 29 दिन? कैसे बना है हमारा कैलेण्डर? कितने पापड़ बेलने पड़े होंगे एक ऐसा कैलेण्डर बनाने में जो साल और दिन के समय में तालमेल रख सके। पढ़ो पेज 3 पर।

कभी सोचा है कि खरगोश या दूसरे जानवरों के इतने बड़े-बड़े कान क्यों होते हैं? चलो कुछ प्रयोगों से अपन भी बड़े कान लगाकर देखते हैं कि इससे क्या फायदे हैं। पेज 28 पर चलो।

मनभावन कविताएँ

7 ऊँट

33 घर में पड़ी लड़ाई

कहानी

9 गप्पू की रंगीली दुनिया

रोचक श्रृंखला

22 हमारे शिक्षक - 16

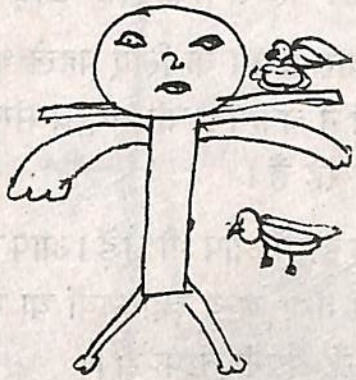

मेरा पन्ना

तुम्हारी अपनी कलम और कूँची का कमाल पृष्ठ 17 से 19, 30 से 32 और 40 पर

हर बार की तरह

2 इस बार की बात

20 तुम भी बनाओ : अपनी किताब

36 माथापच्ची

16 वर्ग पहेली

और भी बहुत कुछ

8 एक मज़ेदार खेल : बूझो डिब्बे में क्या है?

24 खेल दुनिया भर के : कबड्डी

28 चर्चा किताबों की

38 तुम भी लिखो

आवरण : दुर्गाबाई, मण्डला, म. प्र. (फिलहाल भोपाल में निवास)

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात...

हमारे नन्हें पाठक, बड़े पाठक सभी चकमक पसन्द करते हैं। यह बात हम जानते हैं क्योंकि तभी तो आप सब चकमक पढ़ते हैं।

लेकिन सिर्फ इतने से क्या होगा? अगर हर महीने ऐसी चकमक निकालते रहना हो जो आपको लगातार अच्छी लगती रहे, तो इससे कहीं ज़्यादा जानना होगा। हम यह भी जानना चाहते हैं कि चकमक में आपको क्या अच्छा लगता है? क्या कमी है? चकमक की सामग्री में आप और क्या जोड़ना चाहते हैं? कुल मिलाकर यह कि, चकमक आपको कैसी लगती है, इस बारे में विस्तार से लिखें।

चकमक के बारे में, उसकी सामग्री, प्रस्तुतिकरण, भाषा, शैली आदि के बारे में हम एक सर्वश्रेष्ठ पत्र अब हर माह प्रकाशित करेंगे और उसके लेखक को उपहार में कुछ किताबें भी भेजेंगे। लेकिन सर्वश्रेष्ठ का मतलब यह नहीं कि उसमें केवल बढ़ाई ही बढ़ाई हो! तो हमें इंतजार है आपकी समीक्षा का! और यह समीक्षा बड़े-छोटे सभी से अपेक्षित है।

चकमक के प्रचार-प्रसार के लिए पहले भी हम आपसे बात करते रहें हैं। कुछ पाठकों ने चकमक की सदस्य संख्या बढ़ाने में हमारी मदद भी की है और कर रहे हैं।

हम चाहते हैं कि इसमें आप भी जुड़ें। आप चकमक पढ़ ही रहे हैं, अपने परिचितों, मित्रों तथा अन्य व्यक्तियों या स्कूलों आदि को भी सदस्य बनाएँ, प्रेरित करें अपनी तरफ से।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-15 अंक-8 फरवरी, 2000

सम्पादन	वितरण
विनोद रायना	कमल सिंह
राजेश उत्साही	मनोज निगम
कविता सुरेश	अशोक रोकड़े
टुलटुल विश्वास	सहयोग
विज्ञान परामर्श	राकेश खत्री
सुशील जोशी	सुशील शुक्ला

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म.प्र.)
फोन : 563380

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

फरवरी में कितने दिन?

सुशील जोशी

सी अप जूने तीस के, बाकी के इक्तीस
फरवरी अट्ठाइस की, चौथे सन उन्तीस।

यह नियम मैंने बचपन में सीखा था। इसका मतलब है कि (सी) सितम्बर, (अप) अप्रैल, (जू) जून और (ने) नवम्बर हर वर्ष तीस दिन के होंगे। बाकी महीने इक्तीस दिन के और फरवरी अट्ठाइस दिन की होगी। लेकिन हर चौथे साल फरवरी उन्तीस दिन की होगी। चौथा साल कौन सा होगा, यह पता लगाने का आसान तरीका यह है कि जिस सन् में 4 का पूरा-पूरा भाग चला जाए, उस साल फरवरी 29 दिन की होगी।

इसके बाद अगला नियम यह सीखा था कि हर सौवें साल में फरवरी 29 की नहीं बल्कि 28 दिन की ही होती है, हालांकि इन वर्षों में 4 का पूरा-पूरा भाग चला जाता है। अर्थात 1700, 1800 वगैरह वर्षों में फरवरी 28 दिन की रही।

अब वर्ष 2000 आया बड़े शोरगुल के साथ। यह भी एक सौवाँ वर्ष यानी बीस सौवाँ वर्ष है। मगर इसमें फरवरी 28 की नहीं बल्कि 29 दिन की है।

यह क्या चक्कर है? यह फरवरी इस तरह डोलती क्यों रहती है? इसे समझने के लिए ऊपर जिन नियमों की चर्चा की, वे कैसे बने यह समझना होगा।

चलो, पहले हम संक्षेप में नियमों को फिर एक बार दोहरा लें। तालिका में देखो –

वर्ष	फरवरी के दिन	साल के दिन
सामान्य वर्षमें	28	365
4 का पूरा भाग जाने वाले वर्ष में	29	366
शताब्दी वर्ष में	28	365
400 का पूरा भाग जाने वाले शताब्दी वर्ष में	29	366

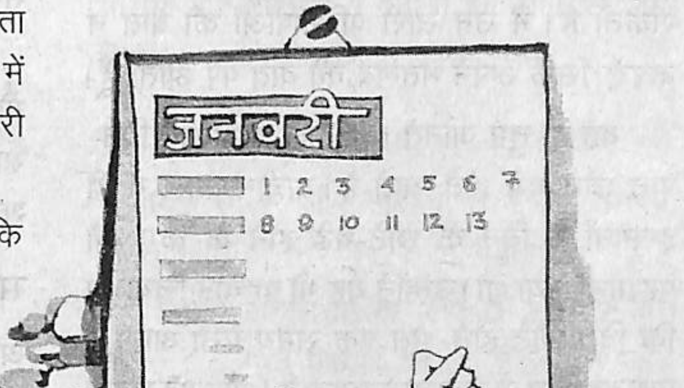

चित्र : सौरभ दास

ये सारे नियम एक साथ नहीं बने थे। धीरे-धीरे इनका विकास हुआ है। संक्षेप में कहूँ तो ये सारे नियम हमारी सहूलियत के लिए बनाए गए हैं। यदि फरवरी न डोले तो ऋतुओं का चक्र और वर्ष का आपसी तालमेल गड़बड़ा जाएगा। चलो, यह समझने की कोशिश करते हैं कि क्या गड़बड़ होगी और फरवरी में एक दिन की घट-बढ़ करके इसका समाधान कैसे होता है!

एक साल मतलब...

पहले यह देखें कि एक साल किसे कहते हैं। वास्तव में साल की परिभाषा कई तरह से हो सकती है। मैं उन सारी परिभाषाओं की बात न करके सिर्फ अपने मतलब की बात पर आता हूँ।

यह तो तुम जानते ही हो कि साल भर दिन-रात छोटे-बड़े होते रहते हैं। प्राचीन काल में ही इन्सानों ने दिन के छोटे-बड़े होने के क्रम को पहचान लिया था। उन्होंने यह भी पहचान लिया था कि दिन छोटे होते-होते एक समय ऐसा आता है जब वह फिर से बड़ा होने लगता है। और यह घटना जाड़ों में ही होती है। अतः यह माना गया कि हर बार सबसे छोटा दिन एक निश्चित समय बीतने के बाद आता है। तो दो सबसे छोटे दिनों के बीच की अवधि को एक वर्ष कहा गया।

यह भी देखा गया कि दिन-रात के छोटे-बड़े होने के क्रम में ऐसा समय भी आता है जब दिन और रात बिल्कुल बराबर हो जाते हैं। ऐसा साल में दो बार होता है। एक बार बसंत में और दूसरी बार शरद ऋतु में। इन्हें समपात कहते हैं। तो एक बसंत समपात से दूसरे बसंत समपात तक के समय को भी एक साल कहा गया। इस तरह जो साल बनता है उसे अयन वर्ष कहते हैं।

साल में दिन कितने?

हम हर साल में 365 दिन मानते हैं। कभी-कभी (फरवरी के चक्कर में) ये 366 भी हो जाते हैं। मगर दिक्कत यह है कि दिन तो छोटे-बड़े होते रहते हैं। इसलिए साल भर के समस्त दिनों की गिनती करके यह हिसाब लगाया गया कि एक औसत दिन कितना बड़ा होगा।

इस औसत दिन के हिसाब से साल में ठीक 365 दिन न होकर 365 दिन 5 घण्टे 48 मिनिट और 46 सेकण्ड होते हैं। इसे दशमलव में लिखें तो कहेंगे कि साल में (मतलब दो बसंत समपातों के बीच) 365.24220 दिन होते हैं।

लेकिन हम चाहते हैं कि एक साल में जितने भी दिन हों, सब पूरे-पूरे हों। इसलिए हमने एक साल में 365 दिन मान लिए। और यहीं से समस्या शुरू हुई।

साल और दिन का तालमेल

अब यदि साल 365 दिन का मानें तो हर साल हम 0.2422 दिन छोड़ रहे हैं। अगर छोड़ने का यह क्रम इसी तरह जारी रहे तो कुछ सालों में बहुत गड़बड़ हो जाएगी। उदाहरण के लिए हम तारीख गिनेंगे तथा जिस दिन हम उम्मीद करेंगे कि समपात (दिन-रात बराबर) हो वह उस दिन न होकर कुछ दिन बाद आएगा। लेकिन हम तो चाहते हैं कि हर साल समपात उसी तारीख को हो।

अब क्या करें?

पहला समाधान

यदि 0.2422 दिन को 0.25 दिन मान लें तो चार सालों में यह $0.25 \times 4 = 1$ दिन हो जाएगा। तो चार सालों में एक बार साल में एक

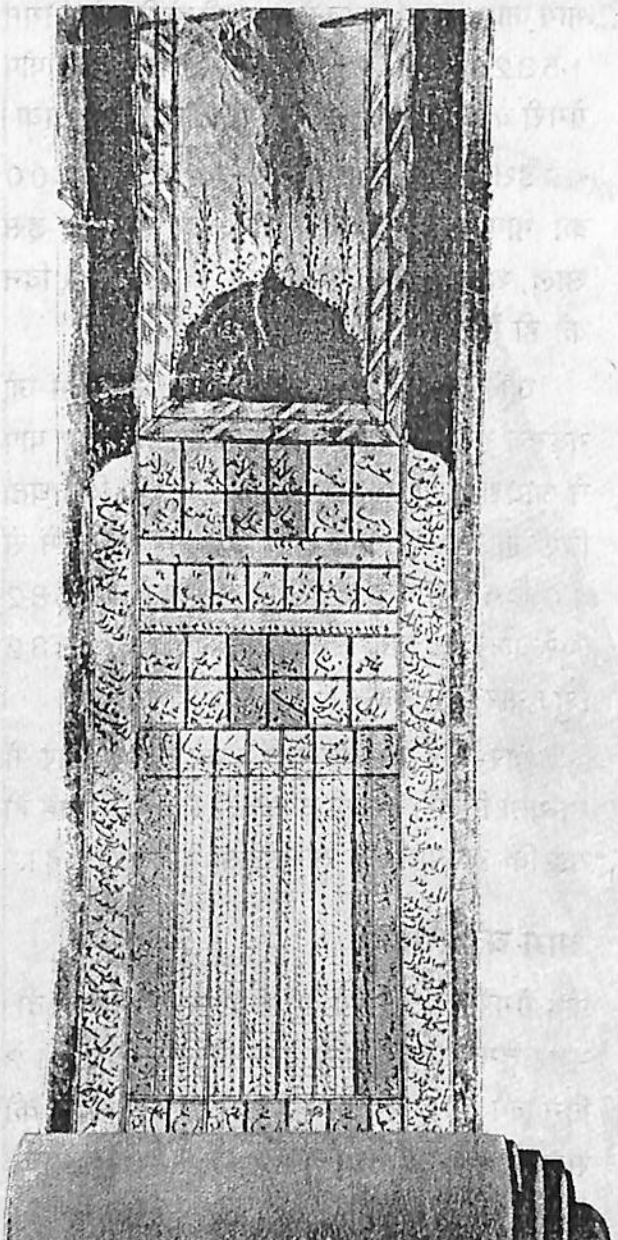

हिजरी सन् 1225 (यानी सन् 1810 ईसवीं) का एक इस्लामी कैलेण्डर। इसमें ऊपर आड़े में महीने व हफ्ते दिए गए हैं तथा नीचे खड़े में हर दिन के फज़्र (सूर्योदय), दोपहर और सूर्यास्त की नमाज़ का वक्त बताया गया है। ***चित्र लाइफ साइंस लायब्रेरी के 'टाइम' से साभार।***

दिन जोड़ दिया जाए तो समपात फिर उसी तारीख पर आ जाएगा। इसलिए हर चौथे साल फरवरी में एक दिन जोड़ने की परम्परा शुरू हुई।

यह परम्परा 45 ईसा पूर्व में जूलियस सीज़र ने मिस्र के खगोलशास्त्री सोसीजेन्स की सलाह पर शुरू की थी।

तब तक उस समय का प्रचलित कैलेण्डर काफी पिछड़ गया था। इसलिए उस वर्ष सीज़र ने आदेश दिया कि वर्ष 46 ईसा पूर्व में 90 अतिरिक्त दिन जोड़कर उसे 445 दिन का बना दिया जाए। और आगे से हर चौथे वर्ष फरवरी माह 29 दिन का होगा।

इसे जूलियस कैलेण्डर कहा गया। इसने मौसम और तारीखों व महीनों का तालमेल जमा दिया।

नई समस्या

जूलियस सीज़र और सोसीजेन्स ने एक समस्या तो सुलझा दी मगर पूरी तरह नहीं।

उन्होंने सहूलियत के लिए 0.2422 दिन को 0.25 मान लिया। वहाँ 0.25 दिन जोड़ दिया। यानी प्रतिवर्ष अतिरिक्त दिन जुड़ा :

$$0.25 - 0.2422 = 0.0078 \text{ दिन}$$

तुम कहोगे कि 0.0078 दिन ज़्यादा जोड़ दिया तो क्या हुआ। वैसे 0.0078 दिन का अर्थ है 11 मिनट 14 सेकण्ड। इतने से क्या फर्क पड़ता है? यह सही है कि दो-चार साल में इसका असर नहीं दिखेगा मगर लम्बे समय में इसका असर नज़र आने लगेगा। और यही हुआ।

जूलियस सीज़र द्वारा स्थापित परिपाटी अगले 1600 सालों तक चलती रही। इसके अनुसार हम प्रतिवर्ष 11 मिनट 4 सेकण्ड (0.0078 दिन) अतिरिक्त जोड़ते चले जा रहे थे। 1600 सालों तक जुड़ते रहने के कारण एक

बार फिर तारीखों और समपात के बीच अन्तर पैदा हो गया :

1600 × 0.0078 = 12.48 दिन

यानी समपात अपनी तारीख से 12.48 दिन पहले ही आने लगा।

नया समाधान

अब इसे ठीक करने का सवाल उठा। एक तो उस समय तक जितनी गलती हो चुकी थी उसे ठीक करना था। यह तो आसान काम था – बस इतने दिन घटाकर फिर से नई तारीख तय कर देते तो समपात फिर अपनी पुरानी तारीख को होने लगता।

मगर दूसरी समस्या सुलझाना ज़्यादा मुश्किल था और वह यह कि आगे ऐसी गड़बड़ न हो। इसके लिए एक बार फिर गणित! 1572 ईस्वीं में पोप ग्रेगरी ने एक इतालवी खगोलशास्त्री एलॉइसियस लिलियस और एक जर्मन गणितज्ञ क्रिस्टोफर क्लेवियस से सलाह की।

उन्होंने देखा कि प्रतिवर्ष 0.0078 दिन का जो अन्तर पड़ता है वह पूरे 400 सालों में 3.12 दिन का हो जाता है। यानी 3.12 दिन अतिरिक्त जुड़ जाते हैं। इसे उन्होंने लगभग 3 दिन मान लिया।

जूलियस कैलेण्डर के मुताबिक 400 सालों में 100 साल ऐसे होंगे जिनमें फरवरी 29 की होगी। क्लेवियस और लिलियस ने सुझाव दिया कि हमें 400 सालों में 29 दिन की 100 फरवरियाँ नहीं बल्कि मात्र 97 फरवरियाँ रखनी चाहिए। इस तरह से इन तीन दिनों की समस्या सुलझ जाएगी।

इसे एक नियम का रूप दिया गया : सारे शताब्दी वर्षों में फरवरी 29 की नहीं बल्कि 28 की होगी किन्तु जिस शताब्दी में 400 का पूरा भाग जाए, उसमें फरवरी 29 की होगी। यह नियम 1582 में लागू हुआ। इस नए कैलेण्डर को पोप ग्रेगरी के नाम पर ग्रिगेरियन कैलेण्डर कहा गया।

इस नियम के मुताबिक सन् 2000 में 400 का भाग पूरा-पूरा चला जाता है। इसलिए इस साल, शताब्दी वर्ष होते हुए भी, फरवरी 29 दिन की ही है।

जूलियस कैलेण्डर में 1600 सालों में जो गड़बड़ हो गई थी उसे ठीक करने के लिए पोप ने आदेश दिया कि सन् 1582 में 10 दिन घटा दिए जाएँ। तब 1582 के अक्टूबर महीने में से 10 दिन कम कर दिए गए। 4 अक्टूबर 1582 (गुरूवार) के बाद सीधे 15 अक्टूबर 1582 (शुक्रवार) आ गया।

धीरे-धीरे इस कैलेण्डर को दुनिया भर में मान्यता मिली। इसकी वजह से सहूलियत यह हो गई कि समपात हर साल उसी दिन आता है।

आगे की समस्या

पोप ग्रेगरी ने 3 दिनों की समस्या तो सुलझा दी। मगर तुमने ध्यान दिया होगा कि समस्या 3.12 दिन की थी। अर्थात् अभी भी 0.12 दिन की समस्या बनी हुई है। लगभग 3300 साल में यह पूरा एक दिन बनेगा। तब इस समस्या को भी सुलझाना होगा। ● ●

बूझो तो जानें!!

सोचकर बताओ कि जिन लोगों का जन्म 29 दिन वाले फरवरी माह की 29वीं तारीख को होता है, वे अपना जन्मदिन कैसे मनाते होंगे??

ऊँट

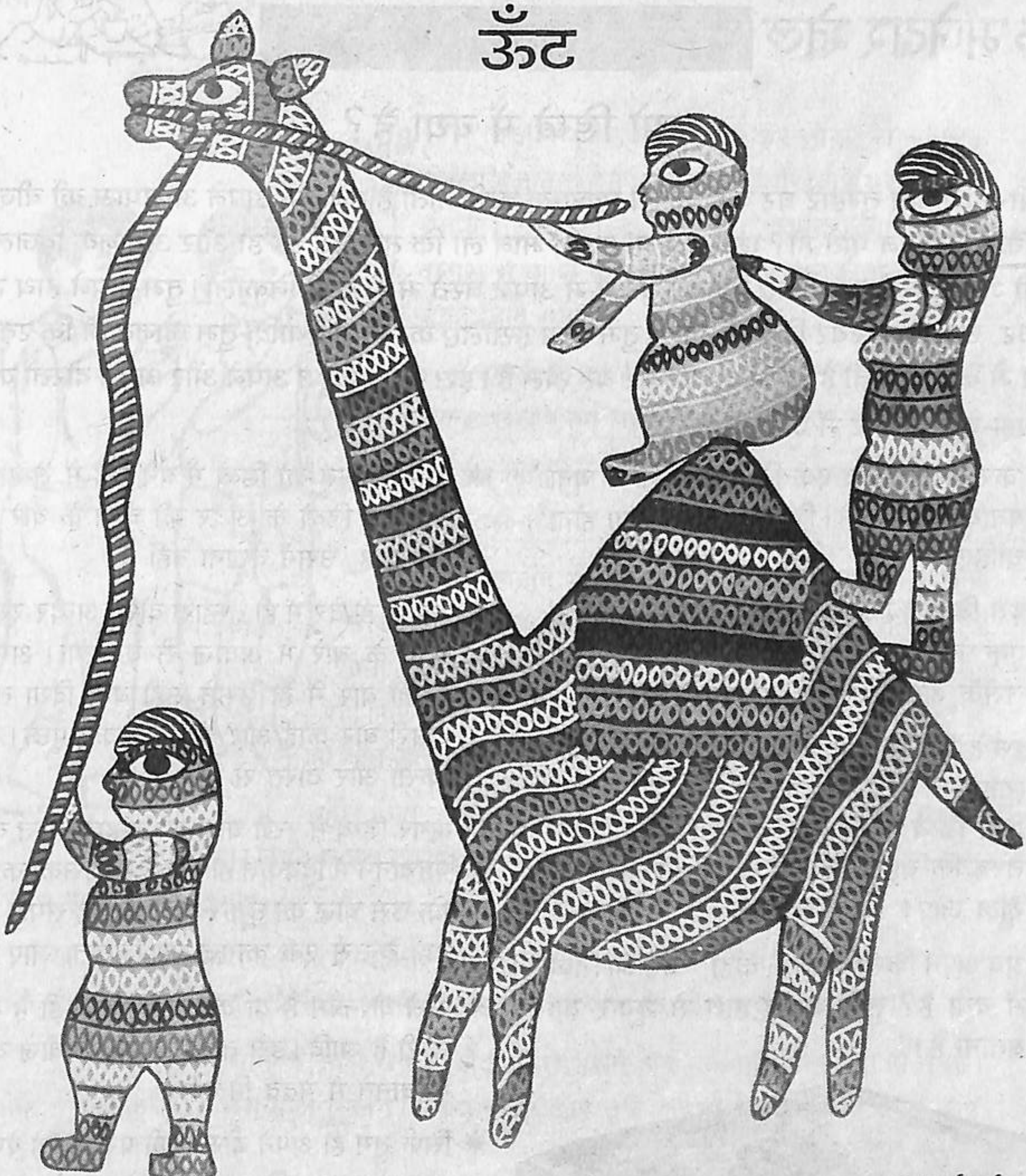

● दुर्गाबाई

ऊँट जी, ऊँट जी!
नहीं पहनते क्यों सूट जी?
कहलाते हो रेगिस्तान के राजा
पर पैरों में नहीं क्यों बूट जी?
ऊँट जी, ऊँट जी!

करते हो हर दम जुगाली,
पीते नहीं कई दिनों तक पानी,
देख तुम्हें हाथी दादा का भी
जाए पसीना क्यों छूट जी?
ऊँट जी, ऊँट जी!

● सुमन्त

बूझो डिब्बे में क्या है?

कभी-कभी जब तुम्हारे घर की बिजली एकाएक चली जाती है तब तुम अपने आसपास की चीज़ों को कैसे पहचान पाते हो? छूकर ही न! अच्छा मान लो कि तुम पढ़ रहे हो और अचानक बिजली चली गई। तुमसे कहा जाए कि तुम अंधेरे में अपने बस्ते में से रबर निकालो। तुम अपने हाथ से छूकर, समझकर रबर निकाल लोगे। तुम ऐसा इसलिए कर लोगे क्योंकि तुम जानते हो कि रबर छूने में कैसी लगती है। इसी आधार पर यह खेल है। इस खेल में तुम अपने और अपने दोस्तों की समझ-बूझ के बारे में जान सकते हो।

✳ करना यह है कि एक डिब्बा बना लो या बना बनाया जुगाड़ लो। डिब्बा ढक्कन वाला होना चाहिए।

✳ इस डिब्बे की ढक्कन वाली सतह पर, बीच में एक छेद बना लो। छेद इतना बड़ा हो कि हाथ उसके अन्दर आ-जा सके।

✳ इसके बाद डिब्बे के अन्दर कोई चीज़ रख दो। (यह काम अकेले में करना, कोई देख न पाए) फिर डिब्बे के ढक्कन को बन्द कर दो। इस तरह कि बहुत आसानी से या अपने-आप न खुल जाए।

✳ अब अपने किसी दोस्त से कहो, ''बताओ डिब्बे में क्या है? तुम्हें केवल हाथ से छूकर यह बताना है।''

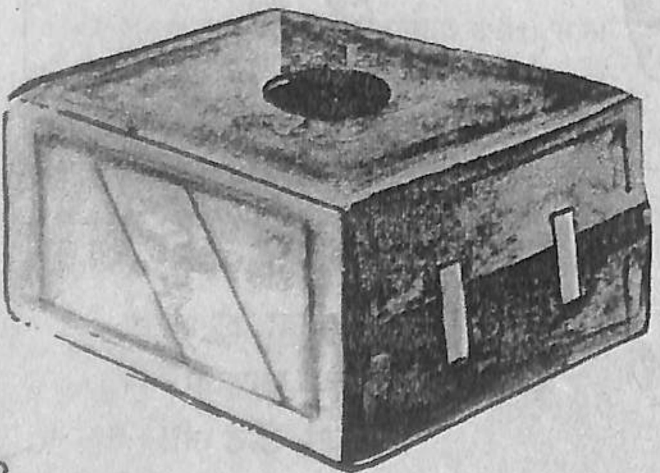

✳ तुम्हारे दोस्त को डिब्बे में बने छेद में से हाथ डालकर डिब्बे के अंदर की चीज़ के बारे में बताना है, उसमें देखना नहीं है।

✳ अब थोड़ी देर में ही तुम्हारा दोस्त अन्दर रखी चीज़ के बारे में अंदाज़ से बताएगा। अगर पहली बार में ही उसने सही बता दिया तब दूसरी बार कोई और चीज़ रखकर पूछो। या किसी और दोस्त से पूछो।

✳ अगर डिब्बे में रखी चीज़ को तुम्हारे दोस्त को पहचानने में दिक्कत हो रही है तो उसको कहो कि उस चीज़ को छूकर जो कुछ वह समझ पा रहा है उसे एक कागज़ पर लिखता जाए।

✳ जैसे वो नरम है या कड़क है। वो बड़ी है या छोटी है आदि। इस तरह लिखने से चीज़ को पहचानने में मदद मिलेगी।

✳ सिर्फ तुम ही अपने दोस्तों की परीक्षा लो ऐसा मत करना। बल्कि अपने दोस्तों के साथ मिलकर तय करो कि वे भी डिब्बे में कुछ रखें (छिपाकर) और तुमसे पूछें कि बताओ क्या है इसमें?

✳ तुम यह खेल ज़रूर खेलकर देखना और फिर अपने अनुभव हमें लिखना। मज़ेदार खेल के मज़ेदार अनुभव हम चकमक में छापेंगे।

गप्पू की रंगीली दुनिया

''क्यों गप्पू कैसी रही'' कहकर सोना, भोला, रिंकू खिलखिलाकर हँसे। गप्पू ने उन्हें देखकर बुरा-सा मुँह बनाया। आज मास्टर जी ने दो चपत लगाकर उसे क्लास से बाहर क्या निकाल दिया, इन शैतानों को तो मौका मिल गया।

''चपाती हो या चपत, गप्पू माँगे गर्मागर्म।'' इक्कट दुक्कट खेलते हुए नानू ने जोर से गुहार लगाई।

''देख लूँगा तुम सबको,'' गप्पू उन सब को देखकर ज़ोर से चिल्लाया।

इसके बावजूद भी शैतानों की टोली ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। गप्पू पर बनाए गए फिकरों और जुमलों से सारे रास्ते सोना, नानू, भोला और रिंकू की चौकड़ी अपना मनोरंजन करती रही। पर यह क्या, आज गप्पू न तो खीजा, न चिल्लाया और न ही बात-बात पर उसने कंकड़ उठाकर मारने की धमकी दी।

''कुछ करो ना जिससे कि इस बुत में जान आए,'' रिंकू धीमे से फुसफुसाया। रिंकू के इस सुझाव पर नानू ने आँख दबाई और मुस्कुराता हुआ गप्पू के साथ-साथ चलने लगा।

''क्या हुआ गप्पू! नाराज हो क्या दोस्त। तुम इन लोगों की बात का बुरा नहीं मानो। इन सब को तो मैं देख लूँगा।'' नानू ने बड़ी आत्मीयता दर्शाते हुए गप्पू के कँधे पर हाथ रखा।

'' .....आँ......,'' गप्पू नानू के स्पर्श से ऐसे चौंका जैसे उसने अब तक की बातें सुनी ही न हों। ''अहाँ.... मैं ठीक हूँ। अच्छा कल मिलेंगे।'' गप्पू बोला और तेज़ कदमों से सामने दिख रहे घर की तरफ़ बढ़ गया।

''नानू ने भरी उड़ान, खाई पलटी, गिरा धड़ाम,'' सोना नानू के चकित और मायूस से चेहरे को देखकर बोली और फिर हँसने लगी। ''मामला पेचीदा है, ''रिंकू दोनों के करीब आते हुए बोला।

गप्पू ने घर में घुसते ही बस्ता एक तरफ फेंका और रसोई की तरफ लपका। मास्टरजी ने सारी दुपहर उसे क्लास के बाहर खड़ा क्या रखा, उसका तो भूख के मारे दम ही निकल गया। जब पेट में चूहे दौड़ रहे हों तो कोई गृहकार्य के बारे में कैसे सोच सकता है। यह इन मास्टरों को कौन समझाए, गप्पू मन ही मन बड़बड़ाया। अपनी ही धुन में जैसे ही उसने रोटी की तरफ हाथ बढ़ाया, ''हाथ धोए गप्पू,'' माँ का गम्भीर स्वर उसके कानों से टकराया।

यह माँ भी हमेशा ऐन वक्त पर ही टोकती है। पता नहीं इसे सब चीज़ों का अंदेशा पहले से ही कैसे हो जाता है। ''सुना नहीं बेटा पहले कपड़े बदल लो। फिर आराम से हाथ-मुँह धोकर खाना खाओ, खाना कहीं भागा तो नहीं जा रहा।''

'ऊँह, खाना नहीं, लेकिन पेट में चूहे तो ऊधम मचाए हुए हैं।' लेकिन गप्पू जानता था कि माँ के आदेश के सामने सब तर्क-वितर्क बेकार है। मन मसोसकर वह बेतरतीब पड़ा बस्ता उठाकर कमरे की तरफ बढ़ गया।

खाना खाते, गृहकार्य निबटाते चार बज गए। माँ की हामी मिलते ही वह तीर की तरह पिछवाड़े की तरफ भागा। कुलाँचियाँ मारते, लगभग दौड़ता-सा वह अपनी नन्ही-सी दुनिया के किनारे पर जा पहुँचा। जैसे ही उसके कदम तालाब के किनारे पर पड़े हुए पत्थरों से टकराए टिटुरी (टिटहरी) ने फुर्र से उड़कर उसका स्वागत किया। ट्विट ही ट्विट टी..... ट्विट ही ट्विट टी की मधुर पुकार से वातावरण गुँजित हो उठा।

'क्या करूँ टिटुरी मैं आज तो तुम्हारे बारे में पुस्तकालय से कुछ भी नहीं ढूँढ पाया। मास्टर जी ने आज कहीं भी नहीं जाने दिया। लेकिन आज मैंने सब काम पूरा कर लिया है। अब कल ज़रूर जाऊँगा।' टिटुरी ने ट्विट .. ट्विट करके गप्पू के इस प्रस्ताव का स्वागत किया। यह पक्षी कितने अच्छे होते हैं, गप्पू मन ही मन सोच रहा था। यह मेरी हर बात भले ही समझते न हों, लेकिन कोशिश तो करते हैं। फिर मुझे अपना मज़ाक उड़वाए जाने का भी भय नहीं रहता है। सचमुच यही मेरे स़च्चे दोस्त हैं।

चिड़ियों को दाना खिलाते, उनकी हर एक भावभंगिमा को निहारते शाम रात का आवरण ओढ़े कब चुपके से आकर छा गई, गप्पू को यह महसूस ही नहीं हुआ। ''गप्पू अरे ओ गप्पू, कहाँ हो तुम,'' जब माँ का स्वर कानों से टकराया तो गप्पू हड़बड़ाया और सब को कल फिर आने का वादा करके घर की तरफ चल पड़ा।

गप्पू के खिले चेहरे को देखकर माँ डाँटते-डाँटते रुक गई। जब से वे जेठपुर में स्थानान्तर होकर आए थे, आज पहली बार गप्पू को उन्होंने इतना खुश देखा था। ''कहाँ था बेटा! रात हो गई है, खेल रहा था क्या, दोस्तों के साथ?'' माँ ने बड़े ही कौतुहल से पूछा।

''न माँ, यहीं था तालाब के किनारे।'' कहता हुआ गप्पू लगभग गुनगुनाता सा हाथ धोने चला गया।

अगले दिन गप्पू को अपने से भी पहले उठा देखकर माँ आश्चर्यचकित रह गई। यह क्या चमत्कार है भगवान। उसे

विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह गप्पू ही है जो तत्परता से स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था। कहाँ तो वह रोज़ उसे ज़बरदस्ती पलंग से उठाकर गुसलखाने में भेजती थी और फिर बड़ी मुश्किल से भिन-भिन करते हुए गप्पू तैयार होता था।

''जेठपुर की आबोहवा हमारे गप्पू को रास आ रही है,'' उसने गप्पू के पिताजी को नाश्ते की मेज़ पर बताया। ''हमारा बेटा सयाना हो रहा है।''

उधर स्कूल पहुँचते ही गप्पू ने जल्दी से बस्ता रखा। अभी स्कूल शुरू होने में पंद्रह मिनट शेष थे। उसने झटपट बस्ते में से चाचा की दी हुई डायरी निकाली और पुस्तकालय की तरफ लपका। हमेशा की तरह आज भी शर्मा सर पुस्तकालय में किताबों की रखरखाव में व्यस्त थे। गप्पू को इतनी सुबह वहाँ देखकर उन्हें भी कुछ हैरानी हुई। इस सातवीं कक्षा के विद्यार्थी को उन्होंने हमेशा बच्चों की फिकरेबाज़ी का निशाना बनते हुए देखा था।

''सर आज मेरा पुस्तकालय का पीरियड तो नहीं है, लेकिन कुछ ज़रूरी जानकारी हासिल करने की लालसा से मैं आज जल्दी स्कूल आया हूँ।''

''कोई स्कूल के प्रोजेक्ट की तैयारी कर रहे हो क्या?'' शर्माजी ने सिर हिलाते हुए चश्मे में से झाँकते हुए कहा।

''नहीं सर, कुछ चिड़ियों के बारे में जानना चाहता था।'' यह जवाब सुनकर तो शर्मा जी की उत्सुकता और गहरी हो गई। वह गप्पू को रेफरेन्स सैक्शन की तरफ ले गए। वहाँ पर एनसाईक्लोपीडिया से लेकर तरह-तरह की किताबें थीं। सर ने उसे डॉ. सलीम अली की 'द बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स' उठाकर दी।

बाप रे, इस किताब में तो ढेरों चिड़ियाएँ थीं। कुछ बड़ी थीं तो कुछ बेहद सुन्दर थीं और कई एक तो ऐसी थीं कि दिल करता था कि देखते ही रहो। गप्पू इन तस्वीरों में खो गया। उसे न तो वक्त का अहसास रहा और न ही यह याद रहा कि शर्मा सर अब भी उसके बगल में खड़े उसके चेहरे पर आते-जाते भावों को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। आखिरकार यह अजूबा पहली बार हुआ था कि स्कूल का एक बच्चा इस तरह की किताब में इतना तल्लीन था।

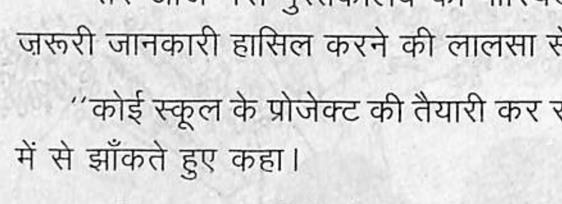

मन ही मन शर्माजी बड़े खुश हुए पर परोक्ष में बोले, ''तुम चाहो तो ये किताब घर ले जा सकते हो। लेकिन बाकी दुष्टों के हाथ में मत पड़ने देना।'' ''हाँ

सर,'' कहते हुए गप्पू के चेहरे पर मुस्कान दाएँ गाल के एक छोर से बाएँ गाल के दूसरे छोर तक फैल गई। पल में ही किताब को लेकर वह क्लास की तरफ उड़न-छू हो गया। कहीं सर का इरादा बदल गया तो लेने के देने पड़ जाते। क्लास में पहुँचते ही किताब बड़े करीने से संभालकर गप्पू ने बस्ते के भीतरी खाने में छुपा दी और फिर छुट्टी होने तक बस्ते के पास से हिला तक नहीं; कहीं किसी ने उसका बस्ता छेड़ा तो.....।

आखिरकार छुट्टी की घंटी बजी और बस्ता बगल में दबाकर गप्पू तरकश से छूटे तीर-सा घर की तरफ लपका। ''अरे आज ये गप्पू ने क्या जुलाब लिया है कि घर भागा जा रहा है।'' नानू ने आदतन फिकरा छोड़ा। पर गप्पू को सुध हो तो वह सुनता। आज उसे टिटुरी के बारे में ज़्यादा जानना जो था।

''गप्पू खाना लगाऊँ,'' माँ ने उसे घर में घुसते देखकर पूछा।

''आँ...'' वह जैसे नींद से जागा और बोला, ''रहने दे माँ, भूख नहीं है। आज जल्दी पढ़ाई खत्म करके, पुस्तकालय से लाई हुई यह किताब पढ़नी है।''

गप्पू और पढ़ाई, वो भी पुस्तकालय से लाई गई मोटी पुस्तक। हे भगवान, तूने चमत्कार दिखा ही दिया, माँ मन ही मन इसे अपने सोमवार के व्रत का चमत्कार मान रही थी!

उधर गप्पू ने झटपट गृहकार्य खत्म किया और किताब लेकर तालाब के किनारे भागा। टिटुरी हमेशा की तरह उसे देखकर फुदकी और फिर उसके पत्थर पर जाकर बैठने से आसमान में गोल-गोल चक्कर लगाने लगी। उधर गप्पू उसकी अठखेलियों में खोए हुए किताब पढ़ने लगा। उसमें टिटुरी को एक लम्बी टाँगों वाली ताँबई रंग की चिड़िया बताया गया था। आखिर ये चिड़िया इतनी धूल मिट्टी में भी सफेद कैसे रहती है, मेरे तो हाथ बार-बार गंदे हो जाते हैं।

किताब में लिखा था कि टिटुरी बहुत ज़्यादा सतर्क चिड़िया है। 'खैर, वह तो है ही, मैं यहाँ

पहुँच भी नहीं पाता हूँ कि वह चिल्लाने लगती है,' गप्पू जैसे अपने आप से बोला। 'पर आज यह अभी तक भी शांत क्यों नहीं हुई है? और कोई है क्या आसपास।' यह सोचते हुए गप्पू ने अपने आसपास नज़र घुमाई, लेकिन दूर-दूर तक किसी का कोई नामोनिशान नहीं था। आगे-पीछे, इधर-उधर नज़रें घुमाते हुए थोड़ी दूर पर घास-फूस के ढेर पर पड़े पत्थरों को मारने ही वाला था कि पत्थरों की बनावट से गप्पू का माथा ठनका। करीब पहुँचने पर गप्पू ने जो देखा तो उसकी बाँछें ही खिल गईं। 'अरे वाह!, अंडे वो भी ज़मीन में घास-फूस के ढेर पर।'

गप्पू ने ध्यान से उन चार अंडों को देखा और भागकर किताब फिर से उठाई। उसने टिटुरी के अंडों का वृत्तांत पढ़ा तो वह हुबहू मेल खाता पाया। टिटुरी अंडे मार्च से अगस्त के बीच में ही देती है। और यह अगस्त ही तो था। गप्पू को तो मानो गड़ा खज़ाना मिल गया। उधर टिटुरी चिल्ला-चिल्लाकर दम निकाले दे रही थी। ''टिटुरी मैं तो तुम्हारा दोस्त हूँ, मैं इन अंडों को कुछ भी नहीं करूँगा।'' गप्पू लगभग चिल्लाकर बोला। लेकिन टिटुरी बेचारी क्या समझती। बस आसपास मंडरा-मंडराकर चिल्लाती रही।

रात में खाने की मेज़ पर गप्पू को गुनगुनाते देखकर माँ और पिताजी मन ही मन खुश हुए। ''लगता है गप्पू का मन लग गया है इस नई जगह पर,'' माँ ने पिताजी को सैर करते वक्त कहा। ''अब तो वह स्कूल की पढ़ाई पूरी करके ही घर के बाहर निकलता है।''

उधर गप्पू बेसब्री से रात बीतने की प्रतीक्षा कर रहा था। सुबह उठते ही झटपट तैयार होकर तालाब की ओर भागा। अंडों को पाँच मिनट दूर से निहारा। फिर टिटुरी से हाथ

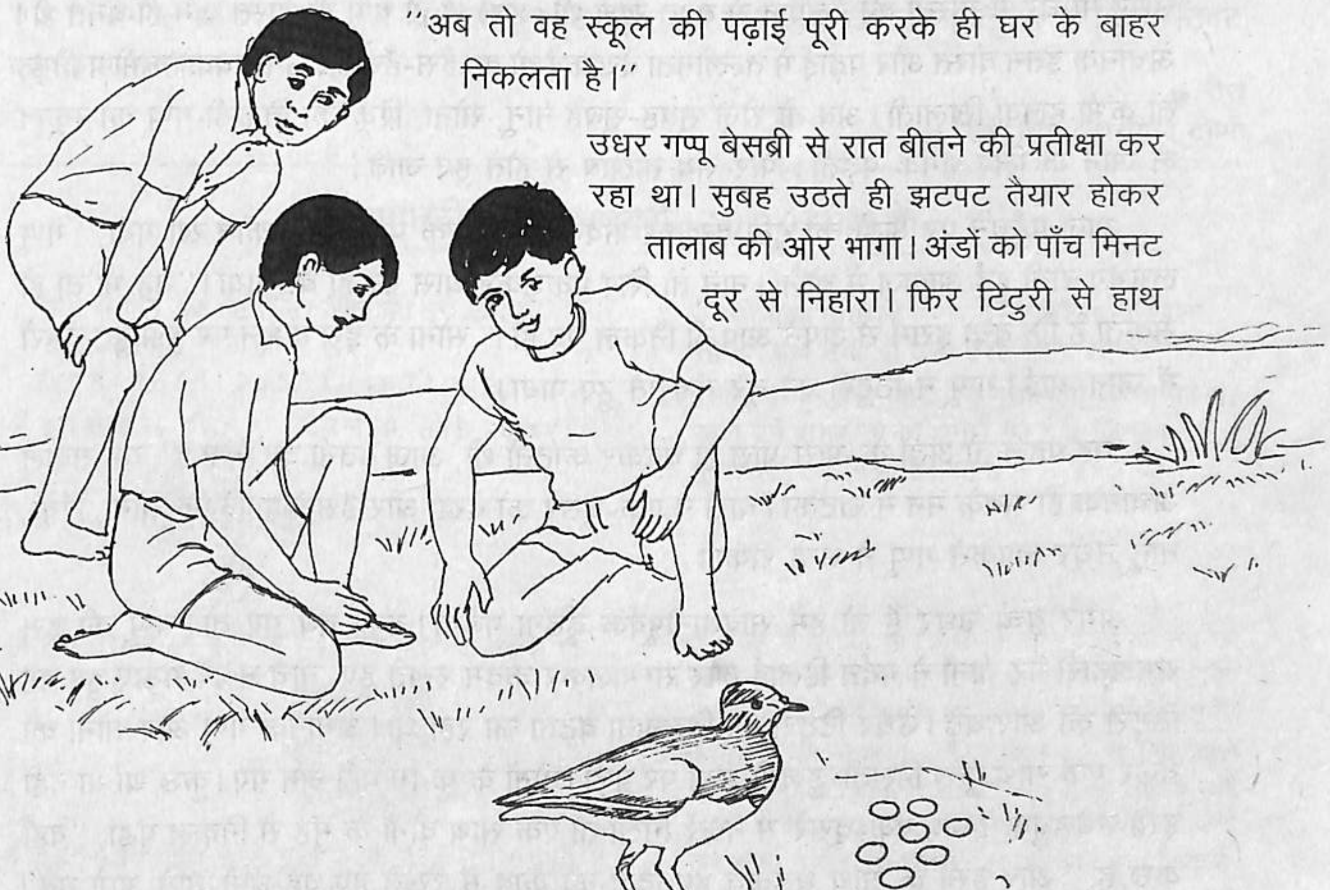

हिलाकर विदा ली और स्कूल की तरफ चल पड़ा।

दिन बीतते गए और उधर गप्पू के सहपाठियों के लिए बदले हुए से गप्पू का रहस्य गहरा होता गया। धीमे-धीमे बहला-फुसलाकर अंडों और टिटुरी का राज़ सारी कक्षा पर ज़ाहिर हो गया। अब तो बुद्धू गप्पू कक्षा का हीरो बन गया।

''दिखा ना गप्पू, हमें भी मिलवा ना दोस्त।'' कहकर जब तब लड़के उसके आगे-पीछे घूमने लगे।

अब घर जाने के वक्त भी वही नानू, सोना, रिंकू उसके साथ-साथ चलते थे। कभी कोई गप्पू का बस्ता सम्भाल लेता तो कोई घर तक छोड़ने आता। हारकर गप्पू को उन्हें अंडे दिखाने ही पड़े। फिर उसने सब पर किताब से हासिल किए ज्ञान को बघारा। सब सहपाठियों का हैरान-सा चेहरा देखकर उसको बहुत खुशी हुई।

'अरे गप्पू तो बहुत कुछ जानता है।' सभी के होठों पर एक ही बात थी। उधर माँ घर में दोस्तों की रेलपेल से बहुत खुश थी। शुरू से ही गप्पू के दोस्त कम ही बनते थे। अचानक इतने दोस्त और पढ़ाई में तल्लीनता देखकर तो वह हँस-हँसकर उन सबको कभी पकौड़े, तो कभी हलवा खिलाती। अब तो रोज़ सुबह-सुबह नानू, सोना, रिंकू की तिकड़ी गप्पू को स्कूल ले जाने के लिए धमक पड़ती। फिर सब तालाब से होते हुए जाते।

आज पहुँचने पर अंडों को टूटा देखकर सबके चेहरे फक पड़ गए। ''कौन खा गया,'' गप्पू लगभग रोती हुई आवाज़ में बोला। नानू तो सिर पकड़कर घास पर ही बैठ गया। ''यह भी तो हो सकता है कि बच्चे इसमें से अपने आप ही निकल गए हों।'' सोना के इस कथन पर बुझे हुए चेहरों में जान आई। गप्पू ने टिटुरी को दूर मंडराते हुए पाया।

'यह पहले तो अंडों के आस-पास ही चक्कर काटती थी, आज इतनी दूर कैसे है', यह सवाल अचानक ही सबके मन में खटका। चारों ने एक-दूसरे को देखा और इससे पहले कि सोना, रिंकू, नानू उधर लपकते गप्पू ने उन्हें रोका।

अगर बच्चे उधर हैं तो हमें सावधानीपूर्वक ढूँढना पड़ेगा। कहीं दब गए तो। गप्पू की इस समझदारी पर तीनों ने गर्दन हिलाई और सम्भालकर कदम रखते हुए, नीचे नज़रें गड़ाए हुए वह टिटुरी की ओर बढ़े। उधर टिटुरी का चिल्लाना बढ़ता जा रहा था। अचानक गप्पू और सोना की नज़र एक साथ कुछ हिलती-डुलती चीज़ पर पड़ी। दोनों के कदम वहीं जम गए। कुछ था या नहीं इसी उधेड़बुन में जब एक-दूसरे से नज़रें मिलीं तो एक साथ दोनों के मुँह से निकल पड़ा, ''वहाँ कुछ है,'' और इसी के साथ धड़कते हुए दिल को काबू में रखते हुए वह धीमे-धीमे आगे बढ़े।

तभी 'मिल गया' की धीमी फुसफुसाहट के साथ नानू अचानक घास में बैठ गया। कुछ पल

के लिए तो किसी को भी सिवाए नानू और सूखी घास के अलावा कुछ भी नज़र नही आया। पर जब आँखें उस पीली और भूरी सतह की अभ्यस्त हुईं तो, एक बेहद लुभावना नज़ारा पाया।

एक प्यारा-सा चूज़ा अपनी लंबी टाँगें समेटकर और आँख बंद करके घास में बैठा था। उसका रंग मिट्टी और घास से इतना मेल खाता था, कि इतने पास होने के बावजूद भी उसे ढूँढ पाना आसान नहीं था। सोना दौड़कर एक बड़ा पत्ता उठा लाई। गप्पू ने बड़ी सावधानी से चूज़े को उठाकर पत्ते पर रखा, पर वह न तो हिला न डुला। बस वैसा ही निर्जीव-सा पड़ा रहा। सबने धड़कते दिल से एक-एक करके उस पर धीमे से हाथ फेरा।

''पहली बार किसी चिड़िया को इतने करीब से देखकर छू रहा हूँ।'' नानू धीमे से उत्साह से कँपकँपाती आवाज़ में बोला। ''अब समझ में आया कि टिटुरी आज इधर क्यों चक्कर मार रही थी'', गप्पू अपनी समझदारी बघारते हुए बोला। ''हाँ, वह अपने बच्चों को आगाह कर रही थी। और अब देखो, इस छोटू को हम अजनबियों के बीच देखकर कितना परेशान और हताश हो रही है।''

''सच, यह बिल्कुल हम सबकी माँ की तरह इसकी चिंता कर रही है।'' सोना के इस कथन पर सबने एक साथ हामी भरी। ''अब इसे छोड़ देते हैं नहीं तो टिटुरी की डर के मारे जान ही निकल जाएगी'' सबने आखिरी बार चूज़े पर हाथ फेरा और पत्ते को घास पर रखकर दूर चले गए। थोड़ी ही देर बाद चूज़े ने धीमे से आँख खोली और पेड़ों की झुरमुट की तरफ दौड़ लगा दी। उधर टिटुरी भी ट्विट-ट्विट करती उसी तरफ चली गई।

● नीरा

● सभी चित्र : अरविन्द टोप्पो

माथापच्ची : हल जनवरी, 2000 अंक के

1. कम से कम 26 चालों में। अंकों को इस क्रम में खाली खाने में ले जाओ –
1,2,3,1,2,6,5,3,1,2,6,5,3,1,2,4,8,7,1,2,4,8,7,4,5,6.

2. इस तरह – बीच में दो सिक्के रखकर।

	1	
1	2	1
	1	

3. एक तरीका हम बता रहे हैं। इसके और भी तरीके हो सकते हैं करके देखो!

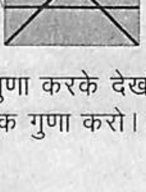

4. 37037 इसे 3 से गुणा करके देखो–111111 अब 6,9,12.....27 तक गुणा करो। आयी न समान अंकों की संख्याएँ।

5. उन्होंने देखा कुछ लोग एक दूसरे को खाना खिला रहे थे। बाद में वे भी उसी तरह खाना खाने लगे।

8. इसके हल के लिए थोड़ा-सा गुणा-भाग करना पड़ेगा। पहले उन संभव सम्भव समूहों को देखें जिनका गुणनफल 36 आता है। यह हैं – 9×2×2
12×3×1
9×4×1
4×3×3
6×6×1

दोस्त ने यह भी बताया था कि उसके तीन बच्चों की उम्र का जोड़ उसके घर के मकान नम्बर के बराबर है। ऊपर दिए गए समूहों का जोड़ क्रमश: 13,16,14,10 तथा 13 हैं। उसके मकान का नम्बर 13 है। लेकिन 13 के जोड़ वाले भी दो समूह हैं। दोनों में से कौन-सा समूह सही है, यह जानने के लिए एक और संकेत की ज़रूरत थी। इसलिए जब दोस्त ने कहा कि सबसे बड़ा लड़का स्कूल जाता है, तो मैं समझ गया कि कौन–सा समूह सही है। क्या तुम समझे?

वर्ग पहेली - 103

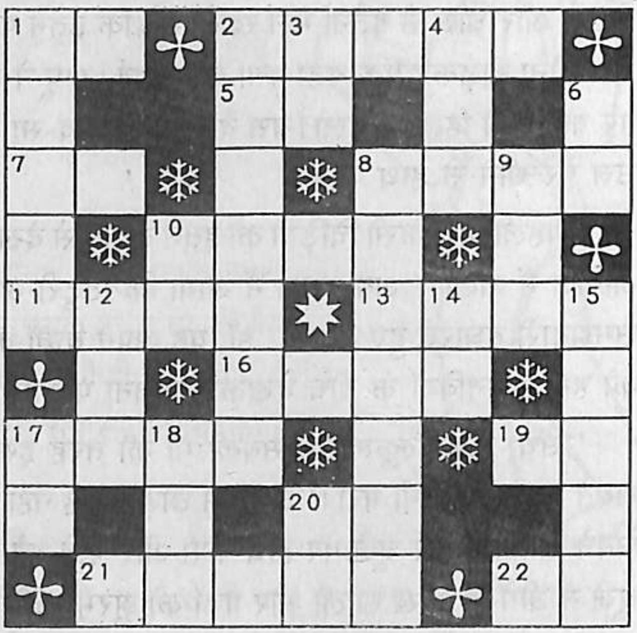

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. नदी का तट या किनारा (2)
2. है हरा पर मुँह लाल करे, उसकी लता (3,2)
5. माप (2)
7. मंत्र तो आते नहीं, फिर भी वज़ीर है (2)
8. बाप-दादों की सम्पत्ति का बँटवारे में मिला हुआ हिस्सा (4)
10. पापड़ बेलो चाहे ताल ठोंको, अच्छी तरह पता लगाओ (4)
11. तनकर बैठी है चिन्दी (4)
13. सदस्यगण (4)
16. वीरता का समय (4)
17. आजू-बाजू, बहुत दूर नहीं (4)
19. बादाम में छुपी है रस्सी, रुपया और कीमत भी (2)
20. फसलों और पेड़ों पर लगने वाला एक कीट (2)
21. दो तम और एक आना, कुल मिलाकर बहुत गुस्सा होना (5)
22. जाड़ों की एक हरी भाजी (2)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. बाहरी दुनिया से बेखबर अपने दायरे में सिमटकर रहनेवाला (2,3)
2. एक प्रसिद्ध मराठा जिनके संचालन में वॉरेन हेस्टिंग्स के खिलाफ पहला मराठा युद्ध लड़ा गया था (2,5)
3. जिसमें कोई सच्चाई न हो, कोरी कल्पना (2)
4. बेला, हिरण और याक के आगे-आगे लाज नहीं लगती (3)
6. राज्यों या सरकारों के संदेशवाहक (2)
8. शक का मुहावरा (2,1,2,2)
9. गर माजरा पता चले तब फूलों की वेणी लगाएँ (3)
10. पंख तो है,.....पूँछ नहीं (2)
12. समतल के भीतर है अंधेरा (3)
14. शक्ति या ताकत (2)
15. जो मारपीट या हिंसा में विश्वास नहीं रखते हों, स्वतंत्रता संग्रामियों का एक गुट (5)
17. शुरुआत (2)
18. नेपाल मत जाना, पहले दिल्ली के हवाई अड्डे पर जाना (3)
20. माँ का भाई, तुम्हारा? (2)

शिवकुमार अंगारे, बंगला मटिया, दुर्ग, म.प्र.
द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली

वर्ग पहेली - 103 का हल चकमक के अप्रैल, 2000 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अप्रैल 2000 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

जामुन का भूत

हमारे गाँव के पास ऊँची-ऊँची डालियों वाला एक पेड़ है। गाँव के कुछ लोग उसे बहुत देखते हैं। उस पेड़ में गर्मियों के दिनों में जामुन पकते हैं। गर्मी के दिन में वहाँ पर भीड़ रहती है। गाँव के अच्छे लोग दिन भर काम करते हैं और रात में प्रकाश लेकर जामुन बीनने जाते हैं।

एक दिन रात को मैं अपने भैया के साथ बगीचे में गई। एकाएक किसी भयानक आवाज़ के साथ ज़ोर-ज़ोर से किसी डाली के हिलने की आवाज़ आई। वहाँ पर बहुत से लोग थे। वे सब डर गए और कहने लगे कि जामुन में भूत है। उसी समय एक पतली डाल टूट गई और एक आदमी गिर पड़ा। उसे लोगों ने खूब पीटा। उसने बताया कि मैं भयानक आवाज़ निकालकर सब लोगों को डराता था। अब सब लोग निडर थे।

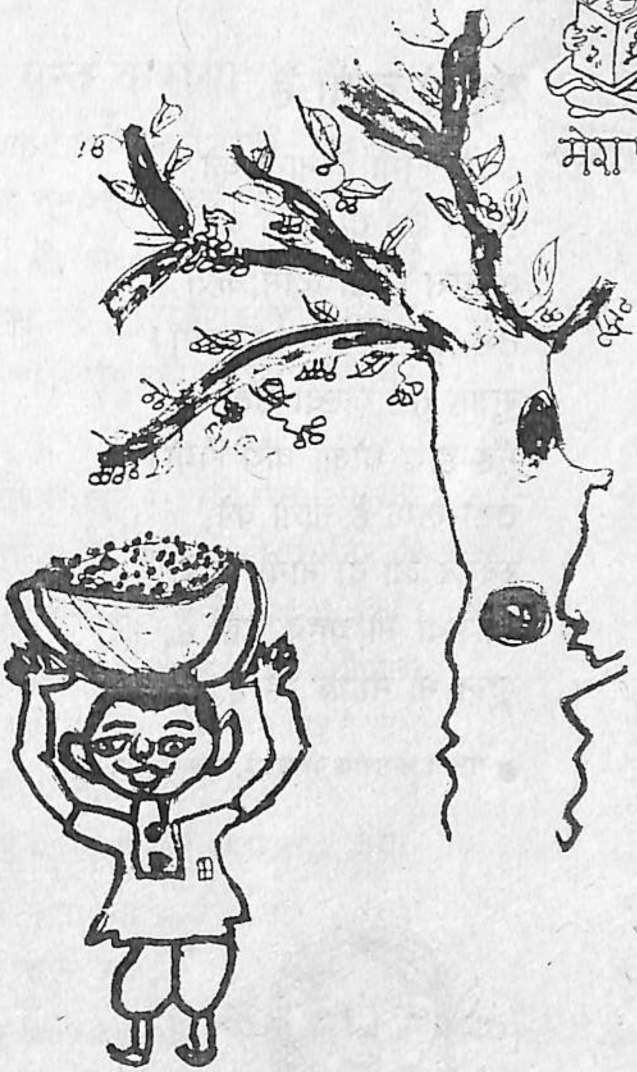

● चित्र एवं कहानी : श्रद्धा गौर, खिरकिया, होशंगाबाद, म. प्र.

फूल

सुन्दर सुन्दर प्यारे प्यारे
फूल खिले हैं कितने सारे
एक गमले ने इन्हें समेटा
गमला हो गया पूरा मोटा

● चित्र एवं कविता : एंजिला विक्टर, धार, म. प्र.

ठण्डी लगी है

ठण्डी लगी है नानी को,
स्वेटर ला दो नानी को।
आलस छोड़ो काम करो,
ठंड का काम तमाम करो।
सुबह तुम जल्दी उठो,
मुँह-हाथ धोओ चाय पियो।
ठंडी लगी है नानी को,
स्वेटर ला दो नानी को।
चिड़िया भी चहक रही है,
फूल भी महक रहे हैं।

● ममता भीमराव वानखेड़े, खण्डवा, म. प्र.

गुड़िया

काँव-काँव करता है कौआ,
चीं-चीं करती चिड़िया है।
गाय रम्भाती बछड़े को जब,
नहीं बोलती गुड़िया है।

● सोहित अग्रवाल, नौगाँव, छतरपुर, म. प्र.

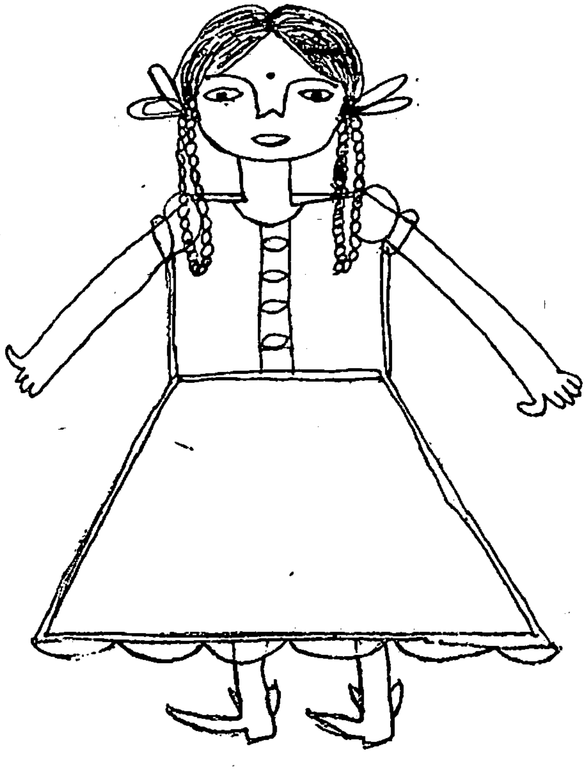

● रुबी आर्य, भिण्ड, म. प्र.

ऐसा क्यों?

एक दिन की बात है मेरी मम्मी ने मुझे कहा कि जा जाकर मार्केट से सब्जी ले आ। मैं सब्जी लेकर आ रही थी। तभी कुछ लड़के मैच खेल रहे थे। अचानक उनकी गेंद मेरी बॉस्केट पर आ गिरी। और मेरी बॉस्केट सड़क पर गिर गई और सारी सब्जी जमीन पर गिर पड़ी तो मैं रोते-रोते घर आई। तो मैंने सब बात मम्मी को सुनाई। मम्मी ने मुझे डाँटा और कहा कि अब सब्जी लेने तू नहीं तेरा बड़ा भाई वसीम जाएगा।

● शिरिन खान, धार, म. प्र.

स्कूल जाना बन्द कराया

एक बार की बात है कि मैं शाहगढ़ में पढ़ने जाती थी। मेरी सहेली की बात हो रही थी और हम लोग अपनी बात कर रहे थे। उनसे हम लोगों की लड़ाई थी। उन्होंने सोचा कि ये लोग हमारी बात कर रही हैं और हम पर टूट पड़ी। उन्होंने मुझसे उलटा-सीधा कह डाला। फिर भी मैं चुप रही। मैं रोते-रोते घर आई।

मेरी मम्मी ने कहा, तुम क्यों रो रही हो। मैंने मम्मी से सब कुछ बता डाला। फिर मम्मी उनके घर गईं। उनके घर जाके मम्मी ने कहा तुम्हारी बेटी मेरी बेटी से बस में लड़ती आई। इतना ही कहा तो उनके पापा टूट पड़े – मेरी बेटी तो बोलना नहीं जानती। तुम उराना ले के आ गई। उनके पापा कहने लगे कि बड़े आदमी की बेटी की कोई नहीं कहता और मेरी बेटी का उराना ले के आती हो। उन लोगों ने मुझे झूठा पाड़ दिया।

मेरी मम्मी ने उस दिन से मेरा स्कूल जाना बन्द करवा दिया। मैं वहाँ से इन्दौर पढ़ने चली गई।

● लक्ष्मी जैन, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

● उज्ज्वल तिवारी, बड़ाजी, बस्तर, म. प्र.

अपनी किताब

तुम अपनी कॉपियों के बचे हुए पन्नों को जोड़कर नई कॉपी तो बनाते ही होगे। आइसक्रीम के लम्बे चम्मच या पुराने बधाई कार्डों से अपनी किताब भी खुद ही तैयार कर सकते हो। इस तरह की किताब बहुत पुराने समय में ताड़ के पत्तों पर लिखकर तैयार की जाती थीं।

सामग्री : मोटी कार्डशीट या बधाई कार्ड या आइसक्रीम के चम्मच, फीता या मज़बूत सुतली, पेंसिल, गोंद, कैंची आदि।

1. अगर आइसक्रीम के चम्मच मिल जाएँ तो कुछ काट-छाँट करने की जरुरत ही नहीं। वरना सबसे पहले तो कार्डशीट या बधाई कार्ड में से लगभग 2 सेंटीमीटर चौड़ी और 15 सेंटीमीटर लम्बी पट्टियाँ काट लो। ऐसी दस या बारह पट्टियाँ एक किताब के लिए चाहिए होंगी।
2. फीते या सुतली के भी लगभग 3 से 4 फुट लम्बे दो टुकड़े काट लो।
3. अब एक पट्टी लो और इसके एक सिरे से 3 सेंटीमीटर छोड़ते हुए सुतली के एक टुकड़े से गठान लगाओ। दूसरे सिरे से भी 3 सेंटीमीटर छोड़ते हुए दूसरा सुतली का टुकड़ा बाँधो।

गठान लगाते समय ध्यान रखना कि पट्टी सुतली से अच्छी तरह से कस जाए। लेकिन इतनी भी न कस जाए कि पट्टी मुड़ जाए या टूट ही जाए।

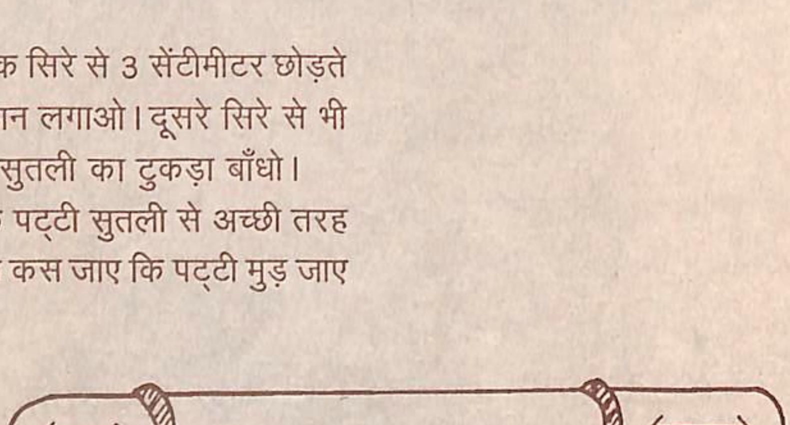

4. फीते के टुकड़ों को भी बीच से आधा करते हुए बाँधना शुरू करना। जिससे बाकी पट्टियाँ बाँधने के लिए पर्याप्त फीता रहे।
5. पहली पट्टी और फीते को बाँध लेने के बाद फीते में एक गठान और लगाओ।
6. फिर फीते में दूसरी पट्टी बाँधो। जिस तरह पहली पट्टी बाँधते

हुए दोनों सिरों पर 3–3 सेंटीमीटर जगह छोड़ी थी उसी तरह दूसरी पट्टी को बाँधो।

7. एक और गठान लगाकर तीसरी पट्टी बाँधो।
8. इसी तरह बाकी पट्टियाँ बाँधो।
9. सभी पट्टियाँ बाँध लेने के बाद फीते और पट्टी के बीच में गोंद लगाकर चिपका लो। ऐसा करने से पट्टी सरक जाने या फीते में से निकल जाने का डर नहीं रहेगा।

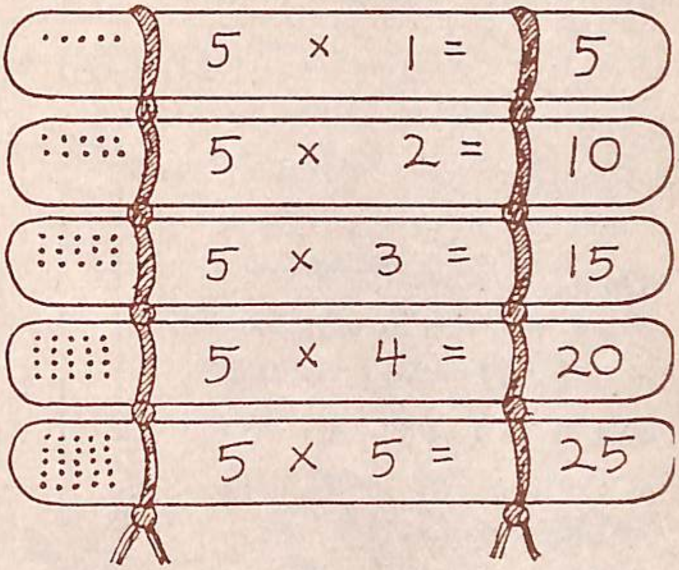

10. जब यह क़ाम पूरा हो जाए तब पट्टियों की बनी इस किताब पर लिखने का काम शुरू करो।
11. यहाँ चित्र में पट्टियों पर 5 का पहाड़ा लिखा गया है। तुम क्या लिखना चाहोगे अपनी किताब पर?
12. जब लिखाई पूरी हो जाए तब किताब बन्द करो। इसके लिए पहली पट्टी को पलटकर दूसरी पट्टी पर ले आओ। फिर उन दोनों को पलटकर तीसरी पट्टी पर ले जाओ। और इसी तरह सभी पट्टियाँ लपेटते हुए अन्त में बचे हुए फीतों से किताब को लपेटकर बाँध लो।
13. यह तो हुआ एक तरीका,दूसरा तरीका यह हो सकता है कि पहली पट्टी को पलटकर दूसरी पट्टी पर लाओ। और फिर इन दोनों को पलटकर तीसरी पट्टी पर पीछे की तरफ ले जाओ। फिर एक पट्टी आगे की तरफ और एक पट्टी पीछे की तरफ ले जाकर पलटते जाओ। जिस तरह तुम कागज़ मोड़कर पंखा या साँप बनाते हो, वैसे। और अन्त में बचे हुए फीते से किताब को बाँध लो।
14. किताब खोलने के लिए फीता खोलकर, पट्टियों को एक-एक करके खोलना।

ऐसी कितनी ही किताबें तुम तैयार कर सकते हो। हमें लिखना, तुमने कौन-सी किताब बनाई और कितनी बनाईं।

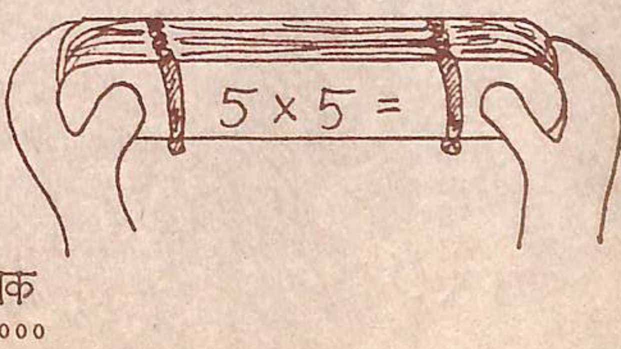

अब तक इस शृंखला में कई लोगों ने अपने स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें लिखीं। तुम्हें यह शृंखला कैसी लग रही है? क्या तुम इसके बारे में कोई सुझाव देना चाहोगे? हम तुम्हारे पत्रों का इन्तज़ार कर रहे हैं। और हाँ इसके साथ ही तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें।

बैंगन का भुर्ता

बात आज से कोई बीस वर्ष पहले की है। मैं हाईस्कूल का छात्र था। हमारा स्कूल बहुत बड़ा था। वैसे तो स्कूल में बहुत सारे अध्यापक थे पर खेल विभाग के अध्यापक कुछ अलग ही किस्म के थे। पूरे गोल-मटोल, रंग काला तथा सिर पर एक लम्बी-सी चोटी। कुछ शरारती लड़कों ने उनका नाम बैंगन रखा हुआ था।

वह कुछ सख्त किस्म के व्यक्तिथे। मैं क्रिकेट व बैडमिंटन खेलने का शौकीन था। इसलिए खाली पीरियड में अक्सर उनसे सामान लेने पहुँच जाता था। वह भी बाकी छात्रों की अपेक्षा मुझे सामान जल्दी निकालकर दे देते थे। शायद इसका कारण यह था कि मैं खेल में स्कूल का प्रतिनिधित्व करता था।

वार्षिक परीक्षाएँ नज़दीक थीं। हमारा रसायनशास्त्र का पीरियड खाली था। सब लड़कों ने मुझे आगे किया और हम उनसे क्रिकेट का सामान लेने के लिए चल दिए। पर उस दिन उन्होंने मुझे भी सामान देने से साफ इन्कार कर दिया। मुझे अपनी बेइज़्ज़ती पर बहुत गुस्सा आया। आधी छुट्टी के समय मैं अपने कुछ मित्रों के साथ विद्यालय के बाग में से गुज़र रहा

था। चर्चा के दौरान उनका प्रसंग आने पर मेरे मुँह से ऊँचे स्वर में ये शब्द निकल गए, ''अरे! वह बैंगन पता नहीं अपने आपको क्या समझता है? प्रिंसीपल से उसकी शिकायत न की तो देखना। बैंगन का भुर्ता न बनाया तो कहना।''

अचानक मेरी नज़र पीछे की तरफ गई तो मेरे होश उड़ गए। वह हमारे पीछे-पीछे आ रहे थे। ज़ाहिर है उन्होंने मेरी सारी बातें सुन ली थीं। हमने वहाँ से भागने में ही भलाई समझी।

अन्तिम पीरियड में मुझे उनकी तरफ से बुलावा आ गया। मैं समझ गया कि आज का दिन विद्यालय में मेरा आखिरी दिन होगा। डरते-डरते उनके ऑफिस में पहुँचा। उन्होंने बड़े प्यार से मुझे बैठाया और कहा, ''फिर मेरी शिकायत प्रिंसीपल साहब से की है कि नहीं? मेरा भुर्ता कब बनाना है?'' मुझे काटो तो खून नहीं। मैं सिर झुकाकर बैठा रहा। वह बोले, ''देखो बेटा, तुम एक अच्छे लड़के हो। मैं तुम्हारी मनोस्थिति समझता हूँ। तुम्हें सामान न देने के कारण तुमने आज अपने को अपमानित महसूस किया है। पर ज़रा सोचो तुम्हारी वार्षिक परीक्षाएँ सिर पर हैं। मैं तुम्हें खेलने की इजाज़त कैसे दे सकता हूँ। तुम्हें तो स्वयं ही खाली पीरियड में बैठकर परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए। जाओ बेटा, खूब मेहनत करो तथा माँ-बाप का नाम रोशन करो।''

उनकी बात सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गए और मैंने उनसे हाथ जोड़कर माफी माँगी। उन्होंने मुझे गले से लगा लिया।

● विजय शर्मा, 'अयोग्य', अमृतसर, पंजाब

● चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

इस बार

कबड्डी

बोल कबड्डी ताल-ताल
मेरी मूछें लाल-लाल

हो सकता है तुमने ये पंक्तियाँ पहले नहीं सुनी हों। पर छै छप छै, छपाक छै.....ज़रूर ही सुन रखा होगा। बता सकते हो किस फिल्म का गाना है यह? बिल्कुल ठीक पहचाना..... हू तू तू।

हू तू तू यानी कबड्डी। इस बार हम कबड्डी की बात ही करते हैं। पश्चिमी और दक्षिण भारत में कबड्डी को इसी नाम से जानते हैं। पूर्वी हिस्से में इसे हददू और छू किट किट कहते हैं।

कबड्डी ऐसा खेल है, जिसमें न तो बल्ले की जरूरत होती है और न गेंद की। और न किसी और सामान की। हाँ, एक छोटा-सा मैदान ज़रूर चाहिए।

कबड्डी का खेल कैसे शुरू हुआ, इसका कोई इतिहास या प्रमाण उपलब्ध नहीं है, पर इतना ज़रूर है कि यह शुद्ध देशी खेल है। और गाँव-गाँव में किसी न किसी रूप में खेला जाता रहा है।

खेलने का तरीका भी सीधा-सा है। खेल में दो टीमें आमने-सामने होती हैं। किसी एक टीम का एक खिलाड़ी सामने वाली टीम के पाले में कबड्डी या हू तू तू या कुछ और बोलता हुआ जाता है। इसे कबड्डी देना कहते हैं। शर्त यह होती है कि जो भी वह बोल रहा है उसका क्रम नहीं छूटना चाहिए। खेल की भाषा में इसे साँस कहा जाता है, यानी साँस नहीं टूटना चाहिए। जब तक खिलाड़ी विरोधी पाले में है तब तक साँस चलती रहनी चाहिए।

हर खेल की तरह कबड्डी की भी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएँ आयोजित होती हैं। 1982 में दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों में इसे प्रदर्शन खेल के तौर पर शामिल किया गया था। उसके बाद अगले एशियाई खेलों से इसे बाकायदा प्रतियोगिता में शामिल कर लिया गया।

हम भी अपने स्कूली दिनों में कबड्डी खेलते थे। हमारे स्कूल के सामने ही एक छोटा-सा खेल का मैदान था। खेलने से पहले हम सभी मिलकर मैदान को साफ कर लेते थे। कंकड़-पत्थर बीन लेने से यह फायदा होता था कि खेलते समय गिरने से चोट पहुँचने के अवसर कम हो जाते थे। मैदान भी अंदाज़ से ही बना लेते थे। 12 कदम लम्बा और 6 कदम चौड़ा। बीच में लकड़ी से ज़मीन को खरोंचकर एक रेखा खींच लेते थे जिससे मैदान दो पालों में बँट जाता था।

अन्य खेलों की तरह कबड्डी के मैदान का भी एक निश्चित नापतौल होता है। पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग आकार का मैदान होता है। पुरुषों के मैदान की लम्बाई साढ़े बारह मीटर और चौड़ाई दस मीटर होती है। मैदान के बीच में यानी सवा छह मीटर लम्बाई पर एक रेखा होती है, जो मैदान को दो भागों में बाँटती है। इस रेखा के दोनों तरफ सवा तीन-तीन मीटर की दूरी पर एक लाइन होती है। इसे ब्लॉक रेखा कहते हैं। इसी तरह बीच की रेखा से दोनों तरफ सवा चार-सवा चार मीटर की दूरी पर एक रेखा होती है। जिसे बोनस रेखा कहते हैं।

महिलाओं के लिए कबड्डी का मैदान पुरुषों की तुलना में थोड़ा छोटा होता है। लम्बाई होती है साढ़े ग्यारह मीटर तथा चौड़ाई आठ मीटर। ब्लॉक लाइन बीच की रेखा के दोनों तरफ ढाई-ढाई मीटर की दूरी पर तथा बोनस रेखा साढ़े तीन मीटर की दूरी पर होती है।

आमतौर पर एक टीम में कुल बारह खिलाड़ी होते हैं। सात खिलाड़ी खेलते हैं तथा पाँच अतिरिक्त होते हैं, ताकि खेल के बीच में यदि कोई खिलाड़ी घायल हो जाए तो उसे बदला जा सके।

हम तो जितने लड़के होते थे उनसे दो टीमें बनाते थे। यह भी ध्यान रखते थे कि दोनों टीमें संतुलित रहें। हमारा एक पहलवाननुमा साथी था। कुछ दिन तक तो ऐसा

होता रहा कि वह जिस टीम में होता वही टीम जीत जाती। वह इतना लम्बा था कि यदि गिर भी जाता तो मध्यरेखा को छू लेता। हारकर हमने तय किया कि वह जिस टीम से खेलेगा, उस टीम को अपने तीन खिलाड़ी विरोधी टीम को देने पड़ेंगे। जब उसकी टीम में दो खिलाड़ी होते तो हमारी टीम में पाँच खिलाड़ी होते। उसके बाद भी उसकी टीम को हराना बहुत मुश्किल होता था।

खेलने के भी हमारे अपने नियम थे। टीम बाँटने के बाद पहले कबड्डी देने कौन-सी टीम का खिलाड़ी जाएगा, इसके लिए हम टॉस-वॉस नहीं करते थे। एक टीम एक मैच में कबड्डी की शुरुआत करती, तो अगले मैच में दूसरी टीम का खिलाड़ी कबड्डी देने जाता। मैच की अवधि भी निश्चित नहीं होती थी। न ही हम दो पारियों में खेलते थे। हमारा मैच तब तक चलता जब तक कि किसी एक टीम के सभी खिलाड़ी मर नहीं जाते। और यह काफी मुश्किल काम होता था। क्योंकि किसी भी टीम का मरा हुआ खिलाड़ी विरोधी टीम के खिलाड़ी के मरते ही ज़िंदा हो जाता है और फिर से खेलने लगता। जितने खिलाड़ी मरे, उतने ही ज़िंदा हो जाते और यह क्रम चलता रहता।

लेकिन कबड्डी प्रतियोगिताओं में पहले कबड्डी देने कौन-सी टीम का खिलाड़ी जाएगा इसके लिए टॉस होता है। जो टीम टॉस जीतती है उसके पास यह अधिकार रहता है कि वह किसी विशेष पाले को चुने या पहले कबड्डी देने जाए।

कबड्डी के मैचों का निर्णय अंक से होता है। कबड्डी देने वाला खिलाड़ी मध्यरेखा से ही कबड्डी-कबड्डी बोलते हुए विरोधी पाले में जाता है। वह विरोधी टीम के अधिक से अधिक खिलाड़ियों को छूकर बिना साँस तोड़े बीच की रेखा पर वापस लौटने की कोशिश करता है।

कबड्डी देने वाला खिलाड़ी विरोधी टीम के जितने खिलाड़ियों को छूकर लौटता है, उतने ही अंक उसकी टीम को मिलते हैं।

यदि वह खिलाड़ियों को नहीं छू पाए तो उसे ब्लॉक लाइन को छूकर लौटना ज़रूरी होता है। अगर वह बिना किसी खिलाड़ी या ब्लॉक रेखा को छुए लौटता है या उसकी साँस टूट जाती है तो विरोधी टीम को एक अंक मिलता है।

कबड्डी देने वाले खिलाड़ी को अगर विरोधी टीम के खिलाड़ी पकड़ लेते हैं, तो भी उनकी टीम को एक अंक मिलता है।

जो भी खिलाड़ी पकड़ा जाता है या छू लिया जाता है, उसे मरा हुआ यानी आउट माना जाता है। उसे मैदान के बाहर बैठना पड़ता है। आउट होने वाले खिलाड़ी की विरोधी टीम का कोई खिलाड़ी यदि पहले से आउट हुआ होता है, तो वह ज़िंदा हो जाता है। यानी अब वह खेल में फिर से भाग लेने लगता है।

कबड्डी का एक मैच बीस-बीस मिनट की दो पारियों में खेला जाता है। यदि इस समय में भी हार-जीत का फैसला नहीं हो पाता तो पाँच-पाँच मिनट का समय और दिया जाता है।

तो ये थी कबड्डी के बारे में मोटी-मोटी जानकारी।

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ला

चित्र : सौरभ दास

गुलज़ार का पंचतंत्र

पंचतंत्र एक ऐसी कृति है, जिसे सदियों से पढ़ा जा रहा है। विष्णुशर्मा ने अज्ञानी राजकुमारों को ज्ञान देने के लिए संस्कृत में कथाएँ लिखीं। ये कथाएँ जीवन का सार बताती थीं। विख्यात फिल्मकार-शायर गुलजार ने भी इसे लिखा-सुनाया। उनका अपना अंदाज़ है। वे प्यारी-प्यारी बातों की शक्ल में बच्चों के लिए न जाने कितनी सर्जनाएँ कर चुके हैं। उनके लिखे बाल गीतों का फिल्मों में अद्‌भुत उपयोग हुआ है। उनके शब्द सहज होते हैं तथा बच्चों के मन से निकले प्रतीत होते हैं। 'लकड़ी की काठी, काठी पे घोड़ा' जैसे गीत और बेहद खूबसूरती से 'जंगलबुक' वाले मोगली के लिए 'चड्‌डी पहनकर फूल खिला है' लिखकर वे बच्चों के मन पर छा गए। इन्हीं गुलज़ार ने अपनी बेटी बोसकी (मेघना) के लिए पंचतंत्र लिखा, सुनाया। बच्चों की भाषा में, बच्चों की लय में यह एक अनूठा प्रयोग था।

बोसकी के लिए लिखे जाते रहे इस 'पंचतंत्र' में किस्सा सुनाने की निराली शैली है। गुलजार इसमें नए बिम्बों की रचना भी करते हैं जिसमें सहज निश्छल हास्य शामिल होता है। वे मृत शेर के हिस्से जोड़कर उसे अपनी विद्या से जीवित करने वाले युवकों की कथा सुनाते हुए समझाते हैं – 'जिग्सॉ' खेला है न तुमने? (जिग्सॉ का मतलब है वह खेल जिसमें अलग-अलग टुकड़े जोड़कर आकृति को मूलरूप में फिर बना दिया जाता है।) खटमल की कहानी भी दिलचस्प अंदाज में चलती है।

राधाकृष्ण प्रकाशन से यशवंत व्यास की प्रस्तुति के साथ 'बोसकी का पंचतंत्र' नए रूप में आया है। पाँच हिस्सों में कहानियों के नाम के साथ इसे बाँटा गया है – **इक चूरन सम्पूरन, हाथ लगी हलवे की हाँडी, गधा, उफ, बड़ा ही गधा है, टुकड़े-टुकड़े जोड़ के और झूठ के जल गए दोनों पाँव।** हर पन्ने पर कथा के अनुरूप बहुरंगी चित्र और साथ में गुलज़ार के शब्द। पाँचों खंडों में गुलज़ार के लोकप्रिय गीतों की अधूरी पंक्तियाँ भी हैं, जिन्हें बच्चे पूरा करके गुलज़ार को भेज सकते हैं। गुलज़ार उनसे संवाद करेंगे और उन्हें उपहार में संगीत के कैसेट भी भेजेंगे। पाँचों खंडों का एक सेट विशेष बहुरंगी बक्से में प्रस्तुत किया गया है। ताकि

बच्चे इसे एक जगह रख सकें और कहीं भी साथ ले जा सकें। बच्चों के नाम गुलज़ार ने एक चिट्ठी भी इसमें रखी है। इस तरह दुनिया भर के बच्चों के साथ वे सीधी बात करने को उत्सुक नज़र आते हैं। यह मौजूदा समय में बिरली बात ही लगती है। हर खंड के अंत में याद रही चीज़ों को लिखने के लिए खाली पन्ना भी छोड़ा गया है। 'बोसकी का पंचतंत्र' जिस रूप में हिन्दी के बाल पाठकों तक आया है, वैसे प्रयास बमुश्किल ही होते हैं। कोई शक नहीं कि इससे बच्चों की दुनिया समृद्ध ही होगी।

● नीलकंठ राय

हमने ये किताबें कुछ नन्हे दोस्तों को पढ़ने को दीं और उनसे कहा कि इन किताबों के बारे में अपनी राय बताओ। इन लोगों ने जो बताया वो भी पढ़ो।

मुझे बोसकी का पंचतंत्र का चौथा भाग अच्छा लगा। इसमें दूसरे ब्राह्मण की कहानी बहुत मज़ेदार लगी। इसमें ब्राह्मण सपना देखता है और हलवे की हाँडी खुद ही तोड़ देता है। इसकी सभी कहानियाँ अच्छी हैं लेकिन यह बहुत महंगी है।

● फराज़, तीसरी, भोपाल

'हाथ लगी हलवे की हाँडी' और 'एक चूरन सम्पूरन' अच्छी लगी। हाथ लगी हलवे की हाँडी में तीसरी कहानी बहुत अच्छी लगी और एक चूरन सम्पूरन में पहली कहानी बहुत अच्छी लगी।

● उत्सव पटेल, दूसरी, भोपाल

मैंने गुलज़ार जी की लिखी बोसकी का पंचतंत्र में से दूसरा भाग पढ़ा। इसमें दो कहानियों में से मुझे झूठे और सच्चे की कहानी अच्छी लगी। इस किताब में खटमल की फ़ैमिली वाली कहानी के चित्र मज़ेदार हैं। खटमल और मच्छर की कहानी में सारे खटमलों को मार देना मुझे अच्छा नहीं लगा।

● खुशबू, पाँचवीं, भोपाल

गुलज़ार कृत बोसकी का पंचतंत्र
प्रस्तुति परिकल्पना : यशवंत व्यास
मूल्य : (पाँच खंडों का पूरा सेट) 250 रुपए
प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002

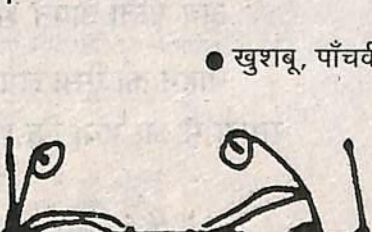

● रेखा मुकाती, सातवीं, देवास, म.प्र.

तुम्हारी मनपसन्द ऐसी बहुत-सी किताबें तुम पढ़ते ही होगे। क्या तुम नहीं चाहोगे कि चकमक के ज़रिए तुम्हारे और दोस्त भी इनके बारे में जानें? तो उन किताबों के बारे में लिख भेजो – कि उनमें क्या है? पढ़कर क्या अच्छा लगा और क्या नहीं?

खरगोश के कान

एक बार कुछ बच्चे जंगल में घूम रहे थे, उन्होंने देखा कि एक लड़का दोनों कानों में शंकु लगाए कुछ सुनने की कोशिश कर रहा है। बच्चों ने उस लड़के से शंकु माँग लिए और उन्हें कानों में लगाकर वे जंगल की आवाज़ें सुनने लगे।

उस समय धूप निकली हुई थी, चिड़ियाँ चहचहा रही थीं, भौंरे गुनगुना रहे थे तथा मच्छर भनभना रहे थे – बड़ा मज़ा आ रहा था। हालाँकि गाँव काफी दूर था, पर कुत्तों के भौंकने व गाय के रम्भाने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। जंगल में काफी शोर मचा हुआ था। दलदल में टर्राते मेंढकों व दूर चलते ट्रेक्टर की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। पर जैसे ही उन्होंने कानों से शंकुओं को हटाया, ये सब आवाज़ें सुनाई देनी बन्द हो गईं। मानो वे अचानक बहरे हो गए हों। सिर के ऊपर चहचहाती चिड़िया की आवाज़ के अलावा और कुछ भी तो सुनाई नहीं दे रहा था।

बच्चों को ये शंकु बहुत अच्छे लगे। उन्होंने भी गत्ते के बड़े टुकड़ों से ऐसे ही शंकु बनाए। सिकुड़ने से बचाने के लिए उन्होंने इन शंकुओं के कोनों पर प्लास्टिक के छल्ले धागे से बाँध दिए।

वे सब जंगल में आ गए। गीता अपना शंकु कान से लगाकर एक खुले मैदान के एक सिरे पर खड़ी हो गई और मोहन अपना शंकु उठाकर मैदान के दूसरे सिरे की ओर दौड़ा। मैदान काफी बड़ा था। लगभग तीन सौ कदम चलकर मोहन रुक गया और अपना शंकु मुँह के पास लाकर अचानक चिल्लाया, 'गीता-आ-आ!!!'

गीता ने बड़ी तेज़ी से शंकु को अपने कान से हटा दिया। उसे ऐसा लगा जैसे कि मोहन सीधे उसके कान में चिल्लाया हो।

अब गीता अपने शंकु में फुसफुसाकर बोली, 'मोहन, ज़रा धीरे से बोलो।'

मोहन को ऐसा लगा जैसे कि गीता उसके कान में फुसफुसा रही हो। अब मोहन की समझ में आ गया कि शंकु में ज़ोर से चिल्लाने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसलिए उसने गीता को बहुत धीरे से उत्तर दिया, 'अच्छा।'

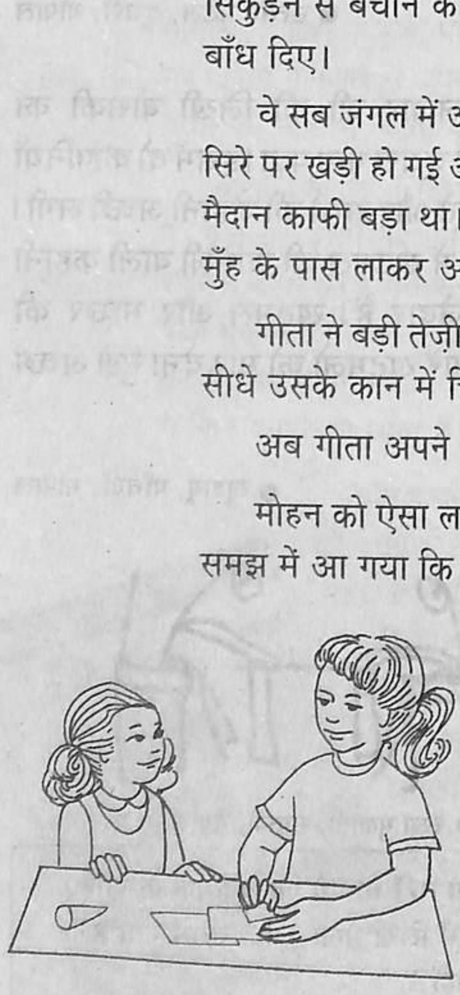

गीता अभी मोहन से कुछ और कहने जा ही रही थी कि बादलों के गरजने की आवाज़ सुनाई दी। सबने देखा कि आकाश में घटा छा गई है और सूरज घने बादलों के पीछे छिप गया है।

'मोहन, दौड़कर इधर आ जाओ!' हेमा चिल्लाई और गीता के साथ एक पेड़ के नीचे खड़ी हो गई। मोहन दौड़कर अभी उस पेड़ के नीचे खड़ा हुआ ही था कि मूसलाधार बारिश शुरू हो गई।

चारों ओर बूँदों की बौछार हो रही थी और इधर मोहन को बड़े ज़ोर की प्यास लग गई। आख़िर उससे रहा न गया और वह कूदकर बारिश में आ गया। मोहन मुँह खोलकर पानी पीने की कोशिश करने लगा।

यह देखकर हेमा को हँसी आ गई। उसने बैग में से एक छोटा गिलास निकालकर घास पर रख दिया। हालाँकि गिलास में बूँदें मुँह से ज़्यादा पड़ रही थीं पर फिर भी उसके भरने में काफी समय लग रहा था। अब गीता समझ गई कि गिलास में जल्दी से पानी भरने के लिए क्या करना चाहिए। वह अपना शंकु लेकर गिलास के पास आ गई। फिर उसने चौड़ा सिरा ऊपर की ओर कर दिया तथा तंग सिरा गिलास की ओर।

शंकु के चौड़े मुँह में काफी संख्या में बूँदें गिर रही थीं, जो तंग सिरे के रास्ते बहती हुई नल के पानी की तरह गिलास में जमा होती जा रही थीं। गिलास जल्दी ही पानी से भर गया और मोहन ने अपनी प्यास बुझा ली। यह सब देखकर हेमा बोली, 'गीता! अच्छा, अब यह बताओ, क्या तुम्हें समझ में आया कि शंकु से आवाज़ क्यों तेज़ हो जाती है ?'

गीता ने उत्तर दिया, ' शंकु का बाहरी सिरा बहुत चौड़ा है, इसलिए उसके अन्दर ज़्यादा आवाज़ जाती है। यह आवाज़ इकट्ठा एक साथ कान तक पहुँच जाती है। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह कीप में पानी जमा हो रहा था।'

'इसका मतलब यह हुआ कि खरगोश के कान भी शंकु का काम करते हैं ?' मोहन ने पूछा।

'अरे, हाँ!' गीता ने हँसकर जवाब दिया। इस बीच बारिश रुक गई थी, सब घर लौट गए।

● 'नन्हें मुन्नों के लिए भौतिकी' से साभार।

शंकु वाला प्रयोग शहर से बाहर जाकर किसी जंगल या मैदान में करो, तो अच्छा रहेगा। बड़े आकार वाले शंकुओं को मुड़ने से बचाने के लिए उनके चौड़े मुँह के चारों ओर चूड़ी या तार के बने घेरे जमा दो। अगर किसी मैदान या जंगल में ऐसे दो शंकु एक दूसरे से 150–200 मीटर की दूरी पर रखें तो उनकी सहायता से फुसफुसाकर बातचीत की जा सकती है। इस प्रकार के शंकुओं का उपयोग अगर तुम अपने खेलो में करो (मिसाल के लिए 'चोर-सिपाही' वाले खेल में), तो मज़ा आएगा।

यदि तुम्हारे पास रबड़ की एक पतली ट्यूब हो तो उसके दो टुकड़े काटकर शंकु के नुकीले सिरे में घुसा दो और उनके चारों ओर टेप लगा दो। ट्यूब के खुले सिरों को दोनों कानों के अन्दर कर लो। दूर की आवाजें अब तुम्हें और भी अधिक साफ़ सुनाई देंगी।

मेरा पन्ना

कबूतर का सपना

भूखे कबूतर ने सोचा एक बार,
कैसे करूँ रोटी की जुगाड़
इस पर भयानक यह जाड़े की मार
जलाकर लकड़ियाँ तापूँ दो-चार

सोचकर चला, वह जंगल के पार
उसे मिला न कहीं कुछ काठ-कबाड़
पड़ रही थी उस पर पानी की मार
कबूतर बेचारा था दुखी लाचार

कैसे करूँ रोटी की जुगाड़,
और इस कँपाते जाड़े का उपचार
उसके दिमाग में कौंधा विचार
बनाता हूँ एक घर शानदार

परन्तु समस्या आई अब की बार
कहाँ से हो लकड़ी का जुगाड़
चाहिए था लकड़ी का ढेर विशाल
कबूतर के मत पूछो हाल-बेहाल

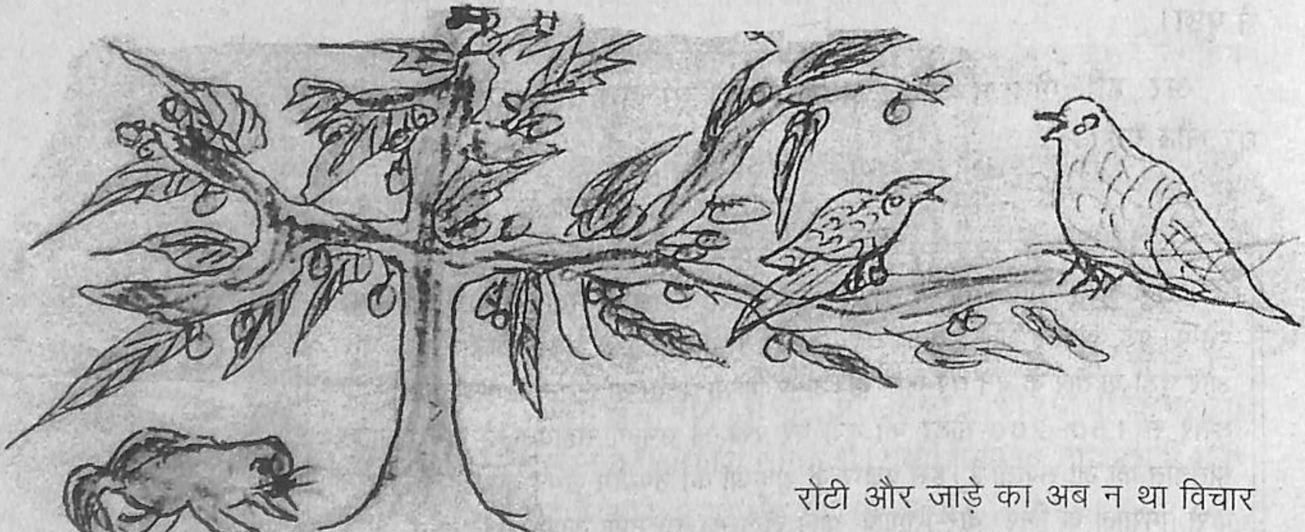

रोटी और जाड़े का अब न था विचार
बनाना था एक घर जानदार
भूखे कबूतर ने सोचा एक बार
कैसे करूँ रोटी की जुगाड़

● जगजीवन, मोहगाँव, बालाघाट, म. प्र.

मित्र तोते को सुनाया विचार
बनाऊँगा मैं एक घर मज़ेदार
तोते ने कहा, ''क्या आइडिया है यार''

थोड़ी सहायता मेरी भी लेना
अपने घर में मुझे भी कुछ जगह देना
दोनों ने हिम्मत से सामान जुटाया
फिर मिलकर दोनों ने घर बनाया

खिड़की दरवाज़ों का रंग था पीला
किन्तु था छज्जा थोड़ा-सा ढीला
छज्जा गिरा सिर पर, तो सिर फूटा था
नींद खुली पता चला बिस्तर टूटा था।

● पारूल बत्रा, टीकमगढ़, म.प्र.

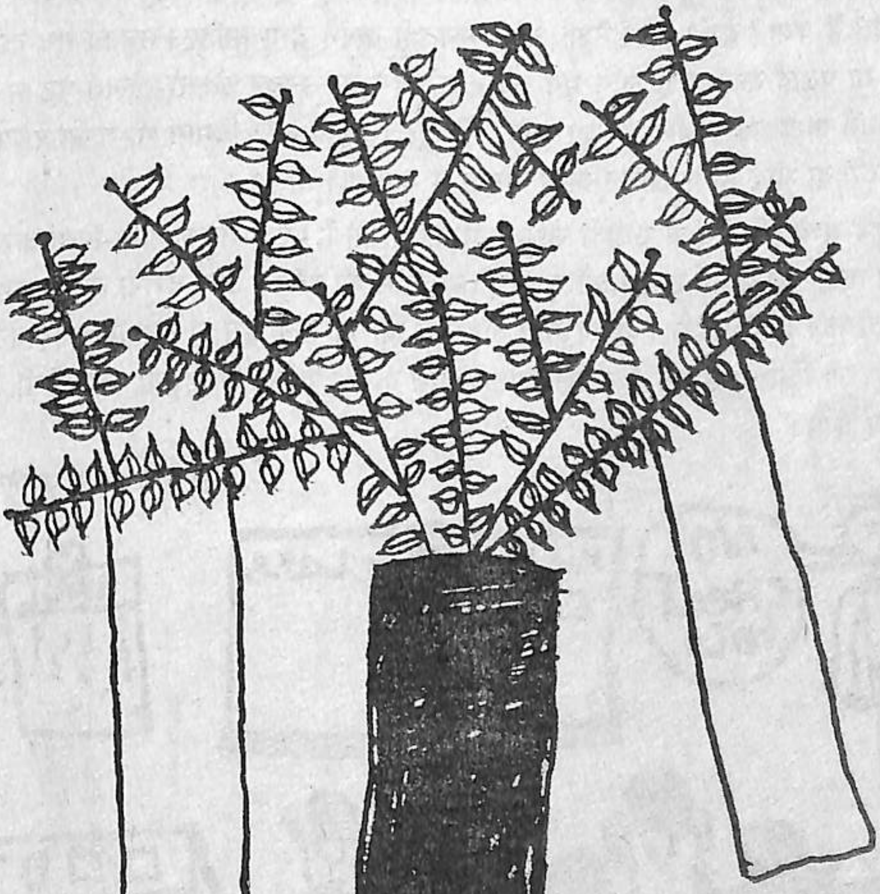

● दीपिका जानू, मोहनपुर, झुंझुनु, राजस्थान

थोड़ा खेल, थोड़ी पढ़ाई

हमारे देश में बच्चों की पढ़ाई का कितना बोझ है। हर बच्चे को खेलना-कूदना पसंद है। पढ़ाई के साथ-साथ खेलना-कूदना भी आवश्यक है। इस जमाने के अध्यापकों को देखो। बच्चों को न जाने क्यों इतना पढ़ाई का दबाव डालते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि बस हम पढ़ाई करें। लेकिन हम फिर भी खेलते हैं।

हमारे अध्यापक भी ऐसा नहीं कहते की तुम बिल्कुल खेलो ही मत। लेकिन वह जब गृह कार्य देते हैं तो इतना देते हैं कि हम गृह कार्य कर ही नहीं पाते। वह तो बेझिझक गृह कार्य दे देते हैं और टेलीविजन देखते रहते हैं। लेकिन बेचारे बच्चे न खेल पाते हैं और न ही टेलीविजन देख पाते हैं। हर महीने टेस्ट होते हैं। हर दो महीने बाद परीक्षा होती है। अध्यापकों को तो कुछ भी नहीं। उधर वो आराम से पेपर निकालते रहते हैं और इधर बच्चे इम्तिहान की तैयारी में जुटे रहते हैं। तीन घंटों में बच्चों के साल भर की परख हो जाती है।

बच्चे फुटबॉल की तरह होते हैं। घर से धक्का दिया तो स्कूल में पहुँच जाते हैं और स्कूल से धक्का दो तो घर पहुँच जाते हैं। मैं तो ऐसा समझती हूँ कि बच्चों को विद्यालय वाले कम्प्यूटर समझते हैं क्या? बच्चों को हमेशा अपने मन की करने देना चाहिए। उनका मन करे तो वह खेलें या पढ़ाई करें। बड़े लोग मन की करने देंगे तो उनका खेलते-खेलते पेट भर जाएगा तो अपने आप पढ़ेंगे और उनका शरीर भी चुस्त रहेगा और दिमाग भी ताज़ा रहेगा। इससे उन्हें ज़्यादा याद होगा और ज़्यादा समझ में आएगा।

हर बच्चे की उम्र से ज़्यादा उसकी पढ़ाई रहती है। एक तरफ माता-पिता कहते हैं कि पहली कक्षा की पढ़ाई तो हमको दूसरी, तीसरी में थी वगैरह और दूसरी तरफ कहते हैं कि याद तो करना ही पड़ेगा। पर ये नहीं कहते हैं कि हाँ चलो हमको इनकी पढ़ाई को रोकना पड़ेगा। जो किताब छापते हैं उनसे जाकर बात करना पड़ेगा कि इतनी नहीं थोड़ी तो सरल किताब छापें।

● श्रुति शर्मा, उज्जैन, म. प्र.

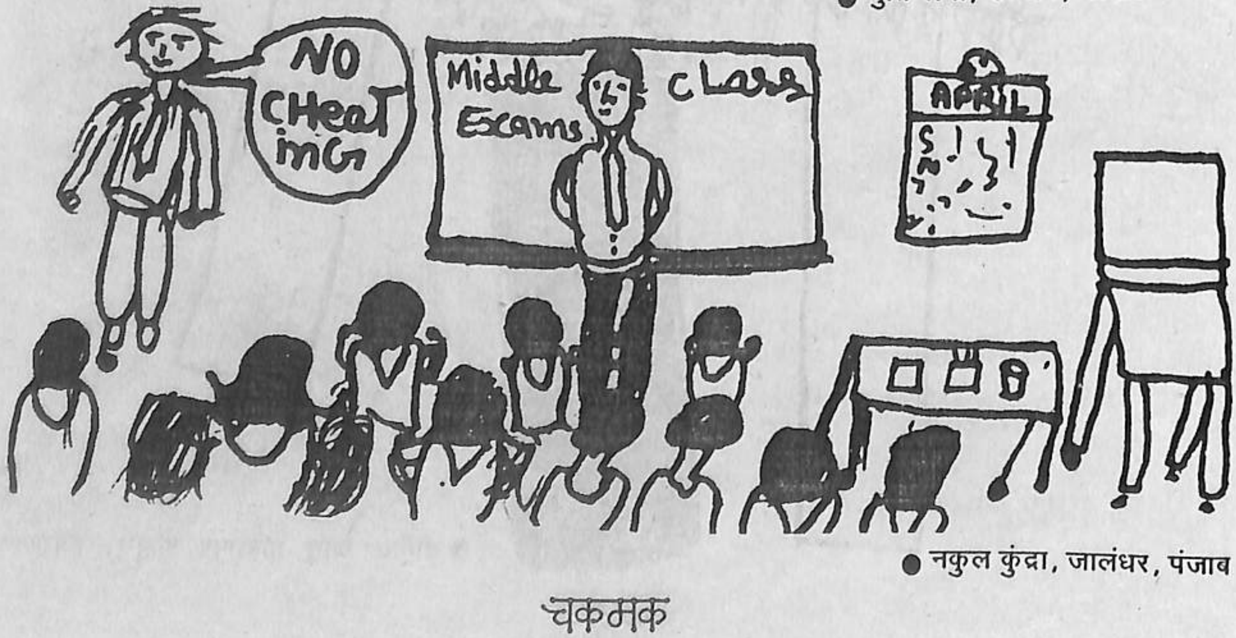

● नकुल कुंद्रा, जालंधर, पंजाब

घर में पड़ी लड़ाई

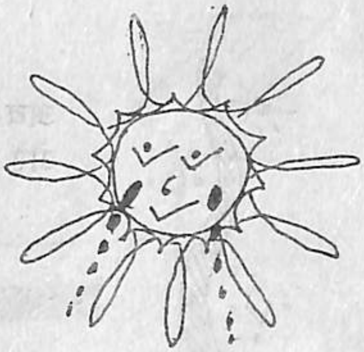

दिलजीत सिंह सिख

एक दिन की मैं बात बताऊँ
पूरा-पूरा हाल सुनाऊँ।
हम सब बच्चे खेल रहे थे
चला खेल में रेल रहे थे।
अचानक ही एक आफत आई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

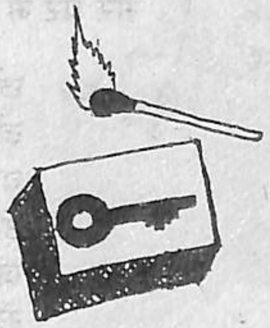

सबसे छोटी बुआ छबीली
वह निकली माचिस की तीली।
दादी के संग रगड़ जो खाकर
लंबी-चौड़ी बात बनाकर।
सारे घर में आग लगाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

बड़े दारजी जो अनब्याहे
ताऊ कह लें उनको चाहे।
मुँह से तो वे कुछ ना बोले
मन-मन वे ज़हर थे घोले।
ज़रा भी जुबान नहीं चलाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

ताऊ से छोटे मेरे पापा
उनसे छोटे तीसरे चाचा
चौथे चाचा हैं जो डॉक्टर
दुकान में रहते घर से हटकर।
आपस में गाली बरसाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

दादाजी तो लट्ठ सम्भाले
घूरें सबको आँखें निकाले
नालायको तुम्हें शर्म नहीं आती
घर में रोज खौंचड़ हो जाती।

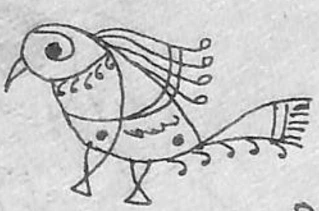

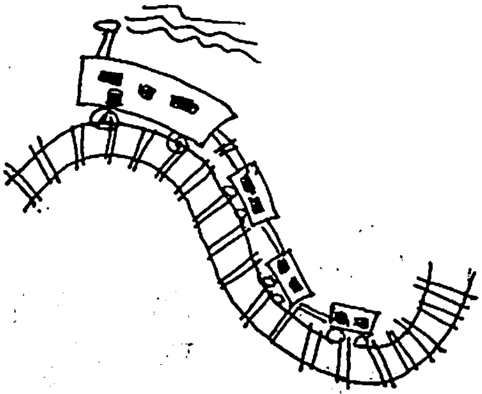

अब तो हो गई हाथापाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

दोनों चाची तीसरी मम्मी
दादी जी जो रहें निकम्मी।
सब खड़ी हुई थीं बीच रसोई
छुड़ाई वाला नहीं था कोई।
अरे छुड़ाओ दादी चिल्लाईं
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

छोटे चाचा हैं जो कुंवारे
जो मम्मी के देवर प्यारे।
चाची भी तो उनकी भाभी
उसी चाचा ने करी खराबी।
जलती हुई जो आग बढ़ाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

जब घर वाले लड़ पड़े थे
हम बच्चे एक ओर खड़े थे।
देख रहे थे युद्ध तमाशा
नाटक समझो अच्छा-खासा।
पर बात समझ में कुछ न आई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

गाँव वालों ने बीच में आकर
हाथापाई से छुड़वाकर।
गालियाँ देना बंद कराया
दादाजी को भी समझाया।
फिर कुछ शांत हुई लड़ाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

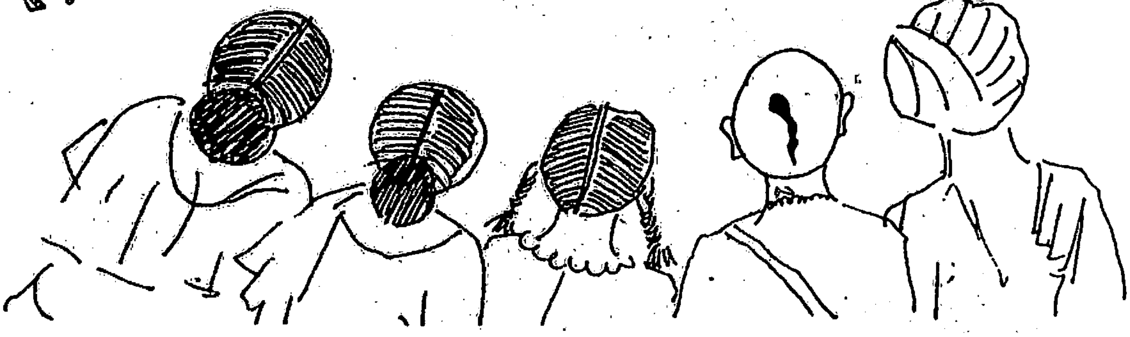

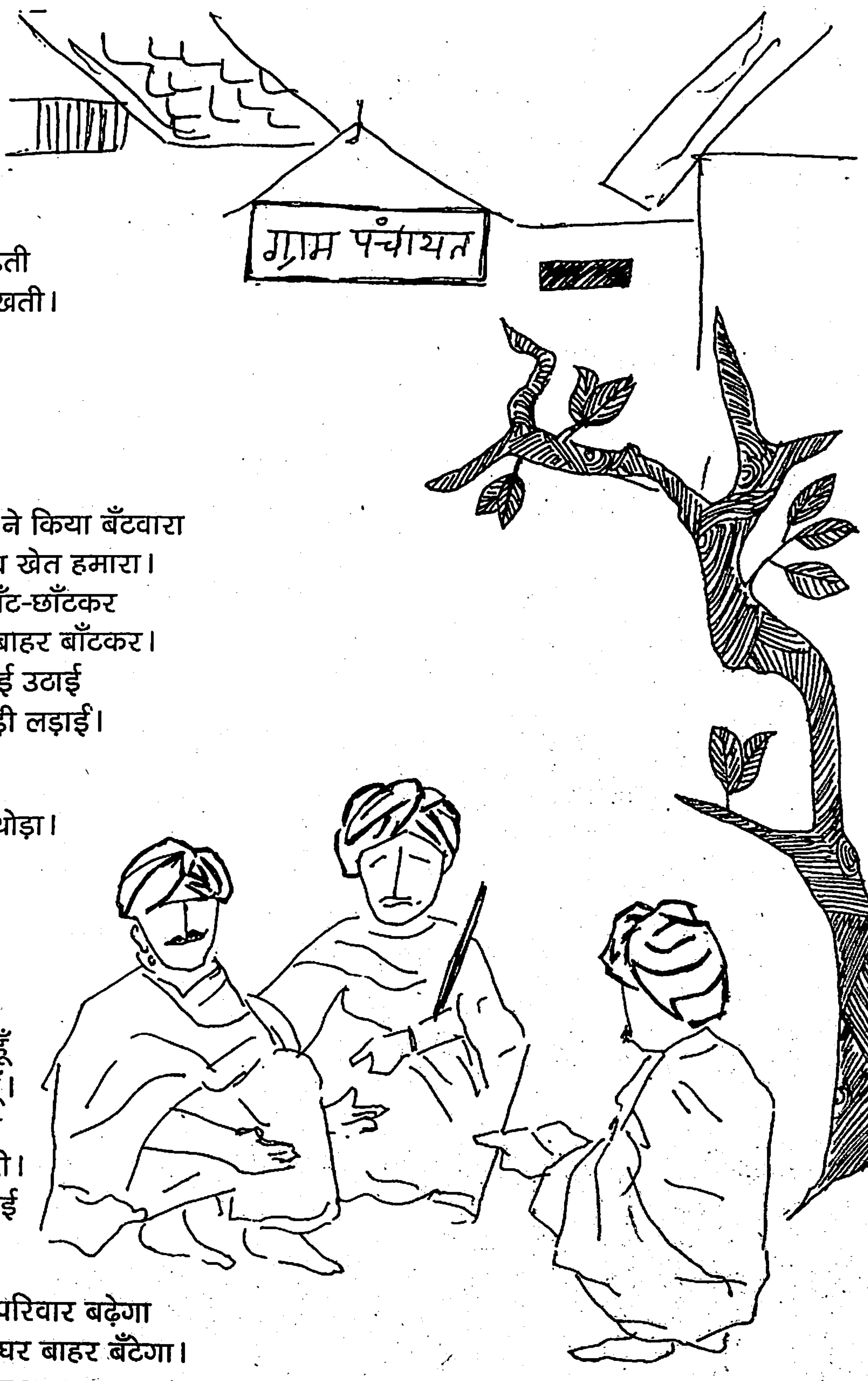

बड़ी बुआ ससुराल में रहती
हमसे कोई सम्बंध ना रखती।
उनको भी पत्र पहुँचाया
पत्र द्वारा यहाँ बुलाया।
पाकर खबरें वो भी आई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

फिर पंचायत ने किया बँटवारा
बाँट दिया सब खेत हमारा।
सारी चीजें छाँट-छाँटकर
सारा ही घर बाहर बाँटकर।
कई दीवारें नई उठाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

मेरा आँगन लंबा चौड़ा
अब तो बँटकर रह गया थोड़ा।
छोटे आँगन में रहकर
बीच दीवारों में घिरकर।
है यह सच्ची बात बताई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

इसका कारण खोज रहा हूँ
अपने दिल में सोच रहा हूँ।
परिवार बड़ा है खर्चा भारी
बहुत कम आमदनी हमारी।
तरक्की बिल्कुल ना हो पाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

इसी तरह परिवार बढ़ेगा
और सारा घर बाहर बँटेगा।
बँटकर थोड़ा रह जाएगा
परिवार गरीबी में बह जाएगा।
भारी मुश्किल आएगी भाई
मेरे घर में पड़ी लड़ाई।

● चित्र : शहला खान

माथापच्ची

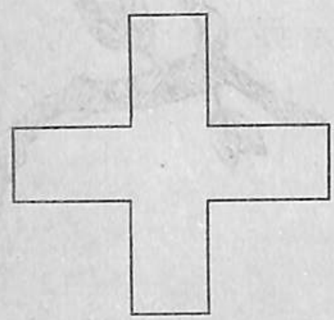

(1)

इस आकृति को एक कागज़ पर उतारकर काट लो। फिर इसके चार बराबर हिस्से करो। इस तरह कि चारों भागों का आकार एक समान हो। दूसरी शर्त यह है कि फिर इन्हीं चार टुकड़ों से तुम्हें इसी क्षेत्रफल का एक वर्ग भी बनाना है?

(2)

चलो! अब कुछ गुणा-भाग भी हो जाए।

27	24	81	✹
3	3	3	3
9	8	27	14

ये संख्याएँ ऐसे ही नहीं लिख दी हैं। इनमें कोई आपसी रिश्ता भी है। उस रिश्ते को पहचानो और बताओ कि ✹ की जगह कौन-सी संख्या होनी चाहिए?

(3)

इन दो आकृतियों में से किस आकृति में त्रिभुजों की संख्या ज़्यादा है। 'अ' में या 'ब' में?

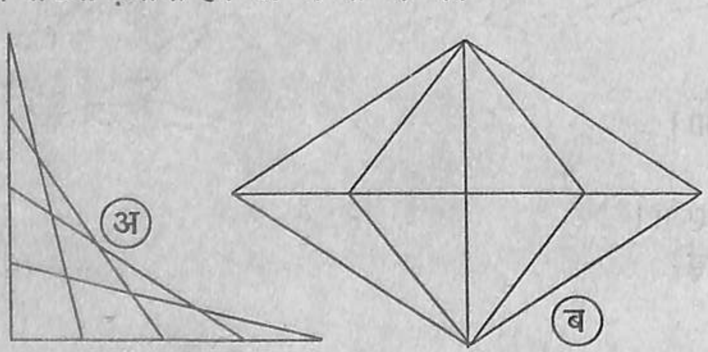

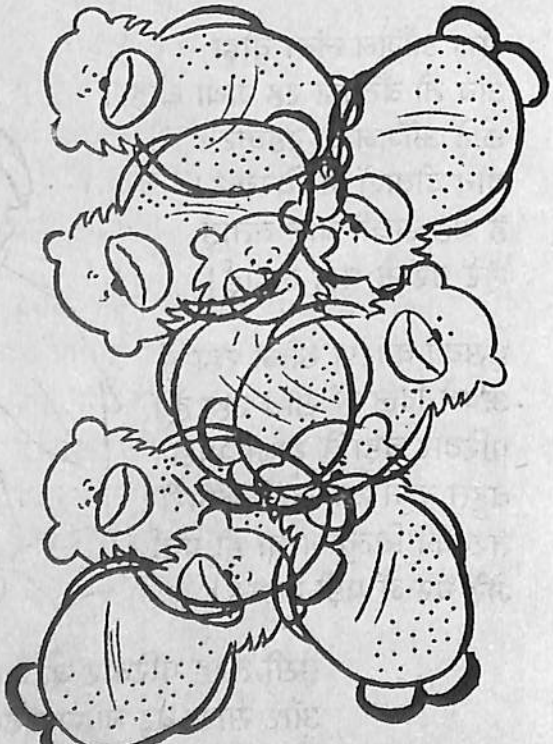

(4)

ज़रा गिनकर तो बताओ
कितने भालू हैं, इस झुण्ड में।

(5)

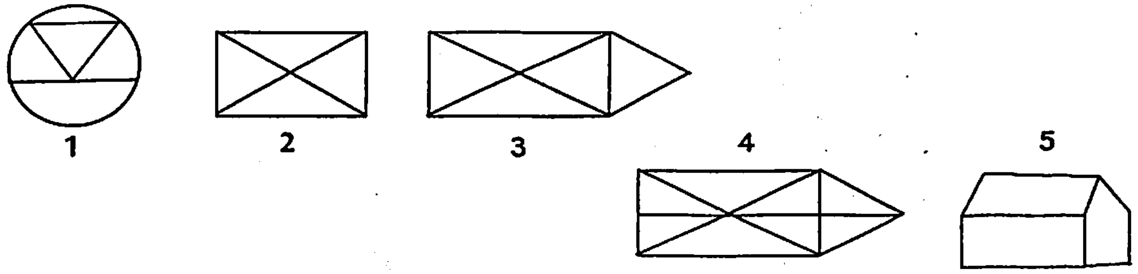

इन पाँच आकृतियों में से कौन-सी आकृति या आकृतियों को तुम बगैर हाथ उठाए और बगैर एक लाइन पर दो बार कलम चलाए बना सकते हो?

(6)

```
   ❖ ✳
   ✳ 0
 ───────
 ✳ 0 ✳
```

अगर 0 (शून्य) को शून्य मान लें तो ✳ और ❖ की जगह कौन से दो अंक रखें कि यह जोड़ का सवाल सही हो जाए?

(7)

एक व्यक्ति सामने खड़ी एक महिला की तरफ इशारा करते हुए कहता है कि, "इसकी सास और मेरी सास माँ बेटी हैं।" क्या तुम बता सकते हो कि सामने खड़ी महिला से उस व्यक्ति का क्या सम्बंध है?

(8)

इस पोस्टमैन की समस्या यह है कि वह किस रास्ते से जाए ताकि सभी घरों में चिट्ठियाँ बाँट सके। ढूँढो शायद तुम्हें वह रास्ता मिल जाए।

तुम भी लिखो

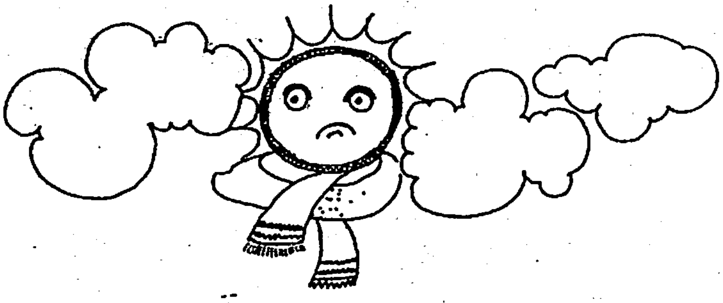

तुम्हें ये चित्र कैसे लगे? क्या तुम इन चित्रों को देखकर कुछ लिख सकते हो?

चलो इन चित्रों के आधार पर कहानी या कविता लिख डालो। कोशिश तो करो। चुनी हुई रचनाएँ चकमक में छपेंगी। और लिखने वालों को मिलेंगी उपहार में कुछ मज़ेदार किताबें। तो उठाओ कलम और कागज़। पता तो तुम्हें मालूम ही है। तुम्हारी लिखी कहानी/कविताएँ हम तक 15 अप्रैल तक पहुँच जानी चाहिए।

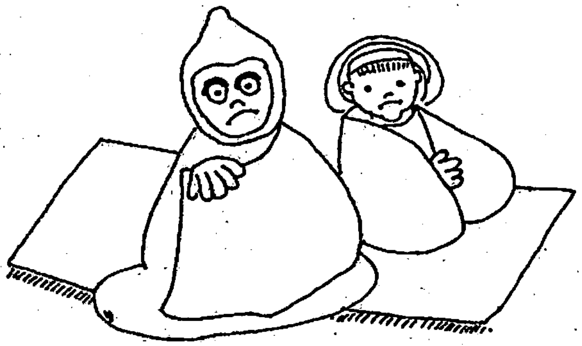

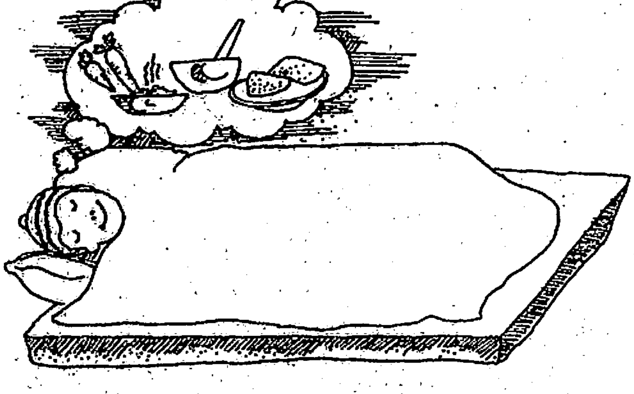

चित्र : धनंजय

पाठक लिखते हैं

दिसम्बर, 1999 की चकमक पत्रिका में एक खेल मुझे बहुत पसंद आया। उस खेल का नाम है चिड़िया उड़ी फुर्र। अपने घर के पास मैदान में कुछ छोटे-छोटे बच्चे और मैंने इस खेल को खेला तो बहुत मजा आया। पहले हम दूसरा खेल खेलते थे। जब हमने ये खेल खेलना शुरू किया तो बहुत सारे लड़के वहाँ खेलने आ गए। हमने उनको भी खिलाया। पहले उन्होंने सीखा। वे लड़के अब शाम को मेरे घर के पास खेलने आने लगे। वो बोलते हैं मजा आया।

● **महेन्द्र प्रजापति, अजमेर, राजस्थान**

बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' एवं आप लोगों के सहयोग से बहुत कुछ सीखने को मिला है। आप बधाई के पात्र हैं। चकमक परिवार का मैं आभार मानता हूँ, जिनसे 'वर्ग पहेली' सम्बंधी आवश्यक एवं सम्यक जानकारी प्राप्त हुई। आपके मार्गदर्शन से मेरी वर्ग पहेलियाँ चकमक में प्रकाशित हुईं। अब मेरी वर्ग पहेलियाँ नियमित रूप से छत्तीसगढ़ की प्रथम बाल पत्रिका 'बालमितान' में प्रकाशित हो रही हैं। इसका श्रेय आप सब को ही है। धन्यवाद!

● **मायाराम सोनकर, राजनांदगाँव, म.प्र.**

मेरी चकमक की सदस्यता अक्टूबर माह में समाप्त हो गई है। मैंने नवम्बर माह के अंक के लिए 10 रु. मनीऑर्डर से भेजे थे, जो मुझे प्राप्त भी हो गया था। पर मुझे आज ही दिसम्बर माह के दो अंक प्राप्त हुए हैं, शायद भूलवश। मैं इनमें से एक अंक रख रहा हूँ, 10 रु. मनीऑर्डर भेज रहा हूँ एवं दूसरा अंक वापस कर रहा हूँ।

कृपया क्षमा करें, मैं पहले भी लिख चुका हूँ कि मैं कुछ कारणों से सदस्यता शुल्क नहीं भेज सकता। चकमक का कैलेण्डरयुक्त अंक भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

साथ ही नए वर्ष और नई सहस्त्राब्दी के अवसर पर चकमक की बच्चों के हित में उत्तरोत्तर प्रगति हेतु मेरी अनेकों शुभकामनाएँ।

● **विनोद कुमार सोनी, गढ़ाकोटा, सागर, म. प्र.**

वर्ग पहेली 101 : हल

सु		ज	वा	ह	रा	त		क
न	ग	द		वा		ब	नि	या
ह			म	ला	ल			म
रा	य	ता		त		आ	फ	त
		री	ठा		से	वा		
सु	रा	ख		म		ज़	ही	न
हा			व	र	म			ल
व	की	ल		म		प	ढ़ा	कू
ना		त	क	री	ब	न		प

वर्ग पहेली 101 का सही हल भेजा है उज्जैन, म. प्र. से आयुषी चौधरी ने। आपको फरवरी, 2000 की चकमक भेजी जा रही है।

यहाँ से काट लें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर माह .... से चकमक भेजना शुरू करें –

नाम .... मोहल्ला ....

डाकघर .... ज़िला .... पिन

सदस्यता शुल्क रु. से भेज रहे हैं।

छह माह	एक साल	दो साल	तीन साल	आजीवन
50.00	100.00	180.00	250.00	1000.00

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक

● जो लागू हो उस पर सही (✓) का निशान लगाएँ।

ड्राफ्ट/चेक एकलव्य के नाम में बनवाकर इस पते पर भेजें –

एकलव्य ई–1/25 अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

फोन : 563380

नाम एवं हस्ताक्षर

चित्रों का पन्ना . . .

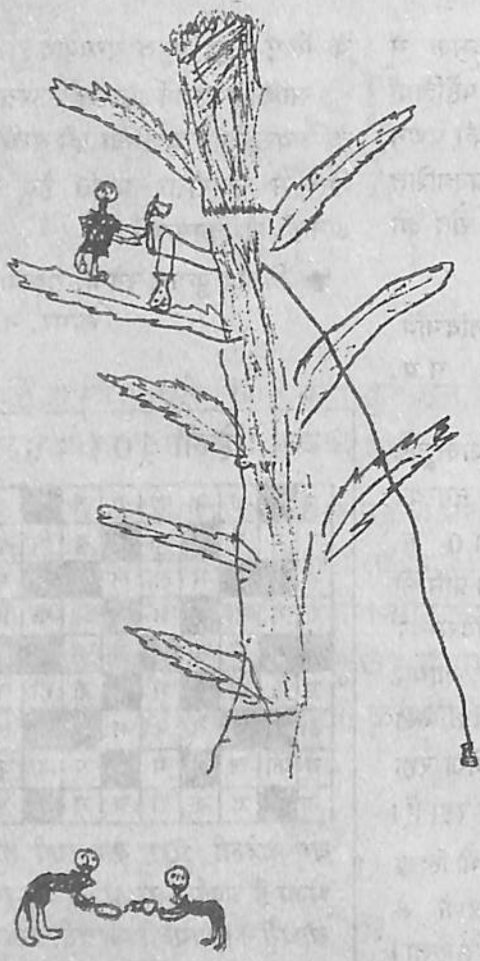

● नीता नाग, बहीगाँव, बस्तर, म. प्र.

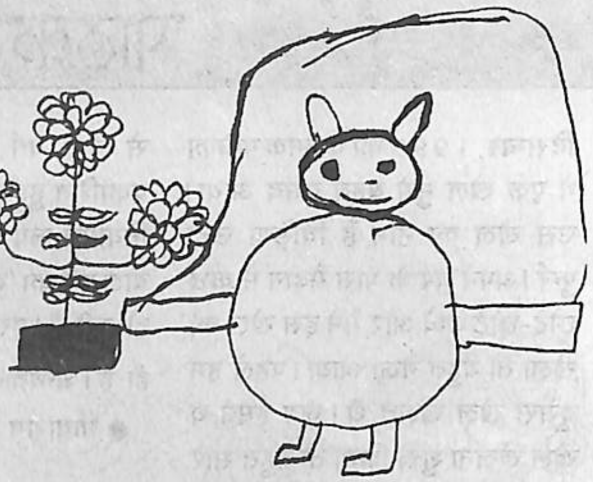

● चिन्ना फिलोमिना, दूसरी, भोपाल, म. प्र.

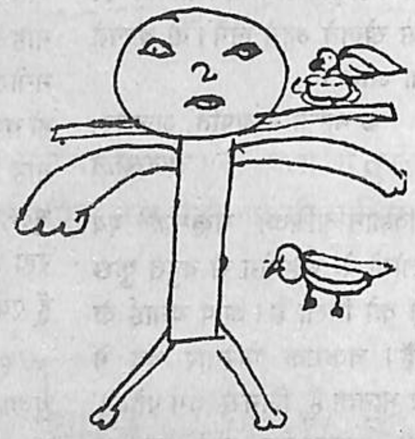

● मंजुला सिंह, सातवीं, भोपाल, म. प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन | | | | | | |

शुभ्रा पँवार, तीसरी, सेंधवा, म.प्र.

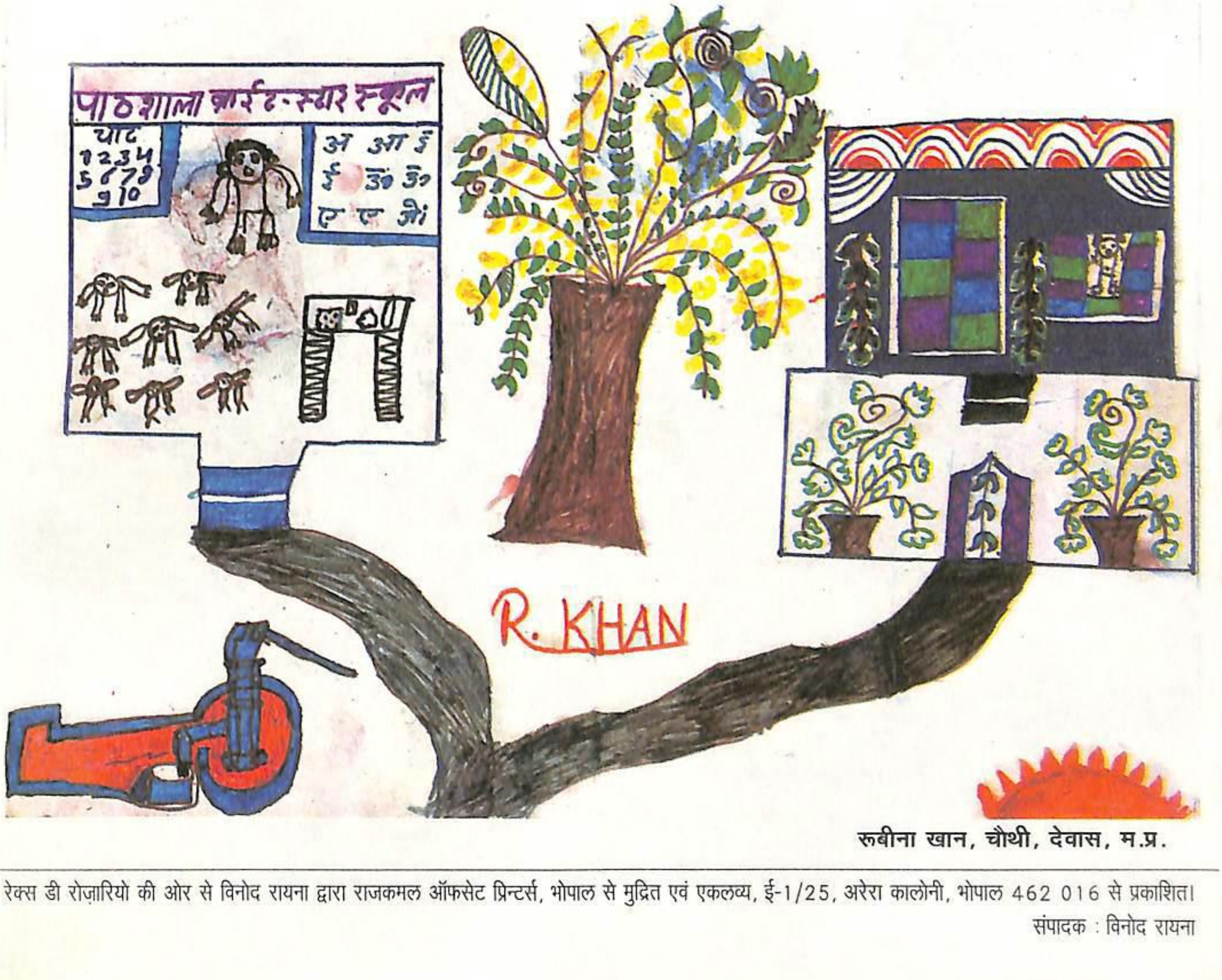

रूबीना खान, चौथी, देवास, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2000

प्रकृति जोशी, विशाखापतनम, आंध्रप्रदेश